Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024-26, R.N.I. No. 72014/1999 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र
terapanthtimes.org

> **भिक्षु वाणी**
> जाजम विछाई कूवा ऊपरें,
> चिहुं कांनी मेल्यो उपर भार।
> भोला वेंसे तिण उपरें,
> ते डूब मरें रे तिण कूवा मझार।।
>
> कुएं के ऊपर जाजम बिछाई हुई है। उसके चारों कोनों पर भार रखा हुआ है। भोला आदमी उस पर बैठ जाता है। कुएं में गिर डूबकर मर जाता है।
>
> –आचार्यश्री भिक्षु

नई दिल्ली • वर्ष 27 • अंक 34 • 25 मई - 31 मई 2026 प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 23-05-2026 • पेज 12 ₹ 10 रुपये

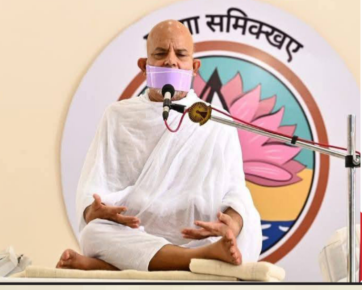

इंद्रिय सुखों के जाल से मुक्त रहकर अंतस की प्रसन्नता खोजना ही सच्ची साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 02

ऊंचा आसन व्यवस्था मात्र, अंतस के सद्गुण ही हैं महानता की असली कसौटी : आचार्यश्री महाश्रमण

पेज 10

Address Here

योगक्षेम वर्ष की गतिविधियों के दस्तावेजीकरण के दिए निर्देश

वैभव की अंधी दौड़ और कमजोर नैतिकता ही इंसान को बेईमानी की ओर धकेलती है : आचार्यश्री महाश्रमण

भौतिकता की दौड़ छोड़ धर्म, स्वाध्याय और सेवा में क्षमता लगाने का किया पूज्य प्रवर ने आह्वान

लाडनूं।
18 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'प्रमाद कैसे किया जाए' विषय पर आगम के आलोक में अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने गृहस्थ जीवन की अंतहीन आकांक्षाओं और मृत्यु की अनिश्चितता का जीवंत चित्रण करते हुए संपूर्ण चतुर्विध धर्मसंघ को प्रमाद छोड़कर जागरूकता के पथ पर बढ़ने का पावन पाथेय दिया।

इच्छाओं का अंतहीन चक्र : आचार्य प्रवर ने गृहस्थ जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं से लेकर उसकी अनंत तृष्णाओं के मनोविज्ञान को स्पष्ट करते हुए मुख्य बातें रेखांकित कीं:

१. आवश्यकता बनाम आकांक्षा: गृहस्थ हो या साधु, जीवन संचालन के लिए आहार-पानी पहली आवश्यकता है। इसके बाद गृहस्थ को स्वयं के घर, कपड़े, आभूषण और परिवार की अपेक्षा होती है।

> जब मौत का समय अनिश्चित है, तो आत्म-कल्याण के मार्ग में प्रमाद कैसे करे मानव?
> -आचार्यश्री महाश्रमण

२.'यह है, यह नहीं है' की दौड़: मनुष्य का मन कभी संतुष्ट नहीं होता। वह निरंतर सोचता है—'घर तो है पर दुकान नहीं, आदमी तो हैं पर कुंडल नहीं।' यही स्थिति राजनीति में है, जहाँ विधायक बनते ही मंत्री बनने की दौड़ शुरू हो जाती है।

३. नैतिकता की कसौटी : यदि मनुष्य में ईमानदारी और नैतिकता के संस्कार पुष्ट हैं, तो वह न्यायपूर्ण तरीके से आजीविका चलाएगा। इसके विपरीत, यदि भीतर का नैतिक भाव कमजोर है, तो वह बेईमानी से भी धन कमाने के प्रपंच में उलझ जाता है।

अनिश्चित काल और प्रमाद का वर्जन: शांतिदूत ने संसारी प्राणियों को सचेत करते हुए फरमाया कि जब मनुष्य 'यह है और यह नहीं है' के इसी ताने-बाने में उलझा रहता है, तभी अचानक मृत्यु आकर उसका हरण कर लेती है।

(शेष पेज 9 पर)

चारित्रात्माओं और मुमुक्षुओं को दी जैन दर्शन के प्रकांड विद्वान बनने की प्रेरणा

मन का होना जीवन के विकास का सूचक, इसी से तय होता है मोक्ष और नरक का मार्ग : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं।
19 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखंड परिव्राजक, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज सुधर्मा सभा में 'आत्मा का स्वरूप' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के आलोक में गंभीर दार्शनिक अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने जैन दर्शन के आस्तिकवाद, पुद्‌गल के लक्षण और मन (संज्ञी चेतना) की दोनों सीमाओं का अत्यंत सूक्ष्म व तार्किक विवेचन किया।

आत्मा का अमूर्त व शाश्वत अस्तित्व : आचार्य प्रवर ने संसार में आत्मा की उपस्थिति और उसके मूल स्वरूप को स्पष्ट करते हुए मुख्य बिंदु रेखांकित किए:

१. आस्तिकवाद का आधार: जो मनुष्य आत्मा के शाश्वत अस्तित्व को स्वीकार करता है, वही पुनर्जन्म, स्वर्ग-नरक और कर्म सिद्धांत को सही मायने में मान सकता है।

२. इंद्रियों से परे : आत्मा में शब्द, रूप, गंध, रस और स्पर्श नहीं होते। जिसमें ये पाँचों गुण होते हैं, वह पुद्‌गल (मूर्त पदार्थ) होता है। आत्मा अमूर्त होने के कारण इंद्रियों की पकड़ में नहीं आती।

(शेष पेज 9 पर)

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
25 मई - 31 मई 2026

भोगी की तुलना में महासुखी होता है तपोधन

इंद्रिय सुखों के जाल से मुक्त रहकर अंतस की प्रसन्नता खोजना ही सच्ची साधना : आचार्यश्री महाश्रमण

साधक को तात्कालिक आकर्षणों से बचकर सदैव होना चाहिए 'परिणामदर्शी'

लाडनूं।
16 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अहिंसा यात्रा प्रणेता, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने सुधर्मा सभा में 'तपोधन महासुखी' विषय पर तात्विक देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने भोगी और त्यागी के जीवन का अंतर स्पष्ट करते हुए मानव जाति को तात्कालिक सुखों के मोह से ऊपर उठकर 'परिणामदर्शी' बनने का पावन संदेश दिया।

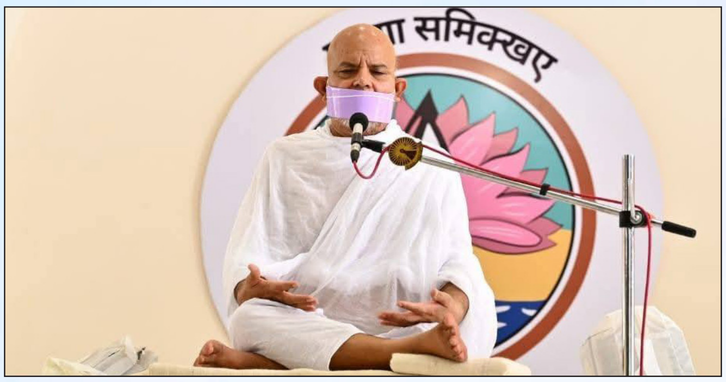

किंपाक फल जैसे हैं काम-भोगः आचार्य प्रवर ने आगम गाथाओं के आलोक में फरमाया कि संसार में दो प्रकार के सुख हैं—एक साधु का सुख जो त्यागी है, और दूसरा संसारी का जो भोगी है। काम-भोगों से मिलने वाला सुख शुरुआत में बहुत अच्छा लग सकता है, लेकिन उसका अंतिम परिणाम अत्यंत कड़वा होता है। इसे स्पष्ट करने के लिए पूज्य प्रवर ने दो मुख्य स्थितियां बताईं:

१. **आपात पटु - परिणाम कटु :** जो सांसारिक सुख तत्काल में तो बहुत मीठे और अच्छे लगते हैं, लेकिन उनका अंतिम परिणाम केवल दुःख और पतन होता है—जैसे 'किंपाक फल'।

२. **आपात कटु - परिणाम पटु :** जो साधना, तप और नियम शुरुआत में तो शरीर को कष्टदायक और कड़वे लगते हैं, लेकिन उनका अंतिम परिणाम आत्मा को परम सुख और मोक्ष की ओर ले जाता है।

तप, योग और शम ही साधु का वैभवः शांतिदूत ने संन्यास जीवन की श्रेष्ठता प्रतिपादित करते हुए फरमाया कि जो आनंद शील गुणों में लीन और वासनाओं से विरक्त भिक्षुओं को मिलता है, वह संसार में दुर्लभ है। एक सच्चे साधु के जीवन में इन गुणों का होना अनिवार्य हैः

१. **तप, योग और शम :** यही साधु का वास्तविक और स्थायी धन हैं, जो आत्मा को निखारते हैं।

२. **कषायों की मंदता :** साधक के जीवन में क्रोध, मान, माया और लोभ बिल्कुल पतले पड़ जाने चाहिए।

३. **सरल और भद्र स्वभाव :** स्वभाव में सरलता, सेवाभाव, विनय और साधना के प्रति निरंतर जागरूकता ही संतत्व की असली पहचान है।

४. **दर्शन से आत्म-लाभ :** ऐसे गुणसंपन्न और जागरूक संतों के दर्शन मात्र से ही सांसारिक प्राणियों को सन्मार्ग की प्रेरणा और आत्म-लाभ मिलता है।

जिज्ञासा समाधान एवं परीक्षा हेतु मंगल पाठ : मंगल प्रवचन के उपरान्त आचार्य प्रवर ने चारित्रात्माओं की विविध शंकाओं और जिज्ञासाओं का समाधान किया।

> ”
> काम-भोग तात्कालिक सुख देने वाले 'किंपाक फल' जैसे
> -आचार्यश्री महाश्रमण

आगामी परीक्षाओं में सम्मिलित होने वाली साध्वियों की एकाग्रता और सफलता के लिए गुरुदेव ने विशेष रूप से मंगल पाठ का उच्चारण कर पावन आशीष प्रदान किया। इस अवसर पर साध्वी पीयूषप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी तथा सहवर्ती साध्वियों के साथ सुमधुर गीत का संगान किया। श्रावक समाज की ओर से निलेश बाफना ने श्रद्धा गीत प्रस्तुत किया और बालक सम्यक ने अपनी सुंदर प्रस्तुति से आराध्य के चरणों में वंदना अर्पित की।

मौत से दोस्ती या अमर होने का दावा असंभव, कल पर कार्य टालना भारी भूल : आचार्यश्री महाश्रमण

गाय के पीछे चलते बछड़े की भांति कर्ता का अनुगमन करते हैं कर्म— शांतिदूत ने दी पवित्र आचरण अपनाने की प्रेरणा

लाडनूं।
17 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, भगवान महावीर के प्रतिनिधि, युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी ने 'मृत्यु के समय कोई त्राण नहीं' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के माध्यम से अमृत देशना प्रदान की। आचार्यश्री ने जीवन और मृत्यु के शाश्वत सत्य को उद्घाटित करते हुए संपूर्ण चतुर्विध धर्मसंघ को आचरण की पवित्रता और कर्म-चेतना के प्रति जागरूक रहने का पावन संदेश दिया।

मृत्यु अटल सच्चाई, कोई रक्षक नहींः आचार्य प्रवर ने फरमाया कि इस सृष्टि में प्राणियों का जन्म होता है, परंतु कोई नई आत्मा पैदा नहीं होती; वही आत्माएं बार-बार जन्म ले रही हैं। जहां जन्म है, वहां मृत्यु भी सर्वथा निश्चित है। इस सत्य को शास्त्रकार के एक जीवंत उदाहरण से स्पष्ट करते हुए पूज्य प्रवर ने फरमाया।

१.**मृग और सिंह का दृष्टांत :** जिस प्रकार एक शक्तिशाली सिंह असहाय मृग को झपटकर ले जाता है, ठीक उसी प्रकार काल (मृत्यु) भी मनुष्य को

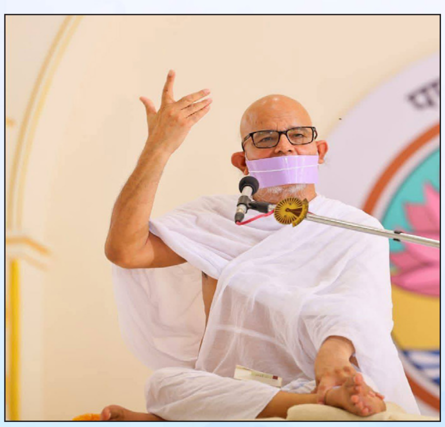

अचानक उठा ले जाता है।

२. **कोई वश नहीं चलता :** मृत्यु के सामने न स्वयं का पुरुषार्थ काम आता है, न माता-पिता या भाई का स्नेह और न ही किसी डॉक्टर की चिकित्सा। डॉक्टर केवल उपचार का प्रयास कर सकते हैं, जीवन बचाने की गारंटी नहीं दे सकते।

३. **कल पर कार्य कौन छोड़े? :** संसार में केवल तीन ही व्यक्ति अपने कार्य को कल पर टालने के अधिकारी हैं—पहला जिसकी मृत्यु से दोस्ती हो, दूसरा जो मृत्यु से भी तेज दौड़ सकता हो, और तीसरा जो

> ”
> सेवा सब कर सकते हैं, पर बीमारी की वेदना कोई बांट नहीं सकता
> -आचार्यश्री महाश्रमण

स्वयं अमर हो। चूंकि यह तीनों ही स्थितियां असंभव हैं, इसलिए प्रमाद छोड़कर साधना में लगना चाहिए।

कर्म का अनुगमन और असाध्य वेदनाः शांतिदूत ने कर्म सिद्धांत की अकाट्यता पर प्रकाश डालते हुए मुख्य बातें रेखांकित कीं।

१. **वेदना का एकाकीपन :** यदि शरीर में कोई गंभीर बीमारी आ जाए, तो परिवार या मित्र केवल सेवा-सहयोग कर सकते हैं, लेकिन उस बीमारी से होने वाली शारीरिक और मानसिक वेदना को कोई बांट नहीं सकता। वह अकेले ही भोगनी पड़ती है।

२. **बछड़े और गाय का उदाहरण :** जिस प्रकार एक छोटा बछड़ा झुंड में भी अपनी माँ (गाय) को ढूंढकर उसके पीछे-पीछे चलता है, ठीक उसी प्रकार मनुष्य द्वारा किए गए अच्छे-बुरे कर्म भी ब्रह्मांड में अपने कर्ता को ढूंढकर उसका अनुगमन करते हैं और फल देते हैं।

पवित्र आचरण के व्यावहारिक सूत्रः मृत्यु के इस भय से मुक्त होने और भावी जीवन को सुधारने के लिए आचार्यश्री ने आचरण शुद्धि के व्यावहारिक नियम बताए।

अहिंसामय जीवन : धरती पर कदम रखते समय पूरी जागरूकता रखें कि किसी भी सूक्ष्म जीव की हिंसा न हो।

यत्नाचार का पालन : पानी को हमेशा कपड़े से अच्छी तरह छानकर ही उपयोग में लें।

छलरहित व्यवहार : जीवन में सदैव सत्य बोलने का प्रयास करें और हमारा आपसी व्यवहार हर प्रकार की वंचना व छल-कपट से पूरी तरह मुक्त हो।

जिज्ञासा समाधान : मंगल प्रवचन के संपन्न होने के उपरान्त, ज्ञान-चर्चा के क्रम में आचार्य प्रवर ने देश-विदेश से आए श्रावकों और उपस्थित चारित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुत की गई विविध तात्विक जिज्ञासाओं का अत्यंत सरल शब्दों में समाधान किया।

ओपीजी एक्स-रे मशीन का हुआ भव्य उद्घाटन

विजयनगर।

तेरापंथ युवक परिषद् विजयनगर द्वारा हम्पीनगर स्थित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर में ओपीजी एक्स-रे मशीन का विधिवत लोकार्पण किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सामूहिक नवकार महामंत्र के संगान से हुआ। जैन संस्कार विधि के अंतर्गत परिषद् के भंवरलाल मांडोत एवं अभिषेक कावड़िया ने संस्कारक की भूमिका निभाते हुए निर्धारित विधि-विधान एवं मंगल मंत्रोच्चार के साथ कार्यक्रम सम्पन्न करवाया।

अभातेयुप राष्ट्रीय अध्यक्ष पवन मांडोत ने एक्स-रे मशीन पर स्वास्तिक अंकन कर शुभारंभ किया तथा पूरी टीम के प्रति मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। तेयुप विजयनगर अध्यक्ष विकास बांठिया ने उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत करते हुए ओपीजी एक्स-रे मशीन के उद्घाटनकर्ता कमलेश एवं भरत डूंगरवाल (मार्गदर्शन फाउंडेशन) के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर सभी प्रायोजकों का जैन पट्ट द्वारा सम्मान भी किया गया।

इस अवसर पर डॉक्टर्स की टीम, अभातेयुप संगठन मंत्री रोहित कोठारी, अणुविभा संगठन मंत्री राजेश चावत, तेरापंथ सभा विजयनगर अध्यक्ष मंगल कोचर, एटीडीसी सह-प्रभारी अमित दक कार्यकारिणी सदस्य एवं श्रावक समाज की विशेष उपस्थिति रही।

आध्यात्मिक मिलन का अपूर्व-उत्सव

रोहिणी, दिल्ली।

युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के विद्वान संत जयकुमारजी एवं शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी का आध्यात्मिक मिलन समारोह का भव्य कार्यक्रम हुआ। महाश्रमण सभागार में सैकड़ो श्रद्धालुओ की उपस्थिति में आनन्द और खुशी की लहर फैलगयी।

शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी ने मुनि श्री का भावभीना स्वागत करते हुए कहा कि तेरापंथ की राजधानी लाडनूं से भारत की राजधानी दिल्ली तक का मुनिश्री का सफर उपलब्धियों भरा एवं शासन प्रभावी रहा और हमारे लिए तो आप संदेश वाहक बन आये हैं। परम पूज्य आचार्य प्रवर का मंगल संदेश हमारे लिए टोनिक है ऊर्जा है। हम आपका बहुत स्वागत करते हुए गौरव की अनुभूति करते हैं। आपका ध्यानयोग, तपोयोग, और मन्त्रविद् शक्ति एवं अनेक उपलब्धियों से धर्म संघ की विशेष प्रभावना हो रही है। आचार्य प्रवर की अनन्त ऊर्जा लेकर आप महाविदेह क्षेत्र जैसे क्षेत्र गुरु सन्निधि से पधारे हो अब राजधानी दिल्ली में साधना की ऊर्जा से जन-जन की चेतना को जगाये यही हमारी मंगल कामना है। जब मुनि जयकुमारजी ने पूज्य प्रवर का संदेश साध्वी श्री को दिया तो ॐ अर्हम की ध्वनि से होल गूंज उठा। मुनिश्री ने अपने प्रेरक उद्बोधन में कहा-गुरु का संदेश सभी साधु हम तो भगवान के घर के कासीद है। गुरु का सन्देश सभी साधु साध्वियों के लिए लायें है। शासनश्री साध्वी सुमनश्री जी हमारे धर्म संघ की विदुषी साध्वी हो आप ऋजुमना है, सरल है। यात्राओं के दौरान आपने धर्मसंध की बडी प्रभावना की है। हमारा धर्म संघ बेजोड़ है जिसमें साध्वी समाज की बहुत बड़ी सेवा है सन्तों के प्रति उदार और प्रमोद भाव है यह सब जिन शासन का प्रताप है।

वर्तमान में आचार्य महाश्रमणजी जैसे महातपस्वी महान योगी आचार्य प्रवर के कुशल अनुशासन में धर्मसंघ अध्यात्म की ऊंचाइयों को छू रहा है। साध्वी सुरेखा जी, साध्वी मधुरलता जी और साध्वी मननप्रभा जी ने मधुर गीत' यह संघ हमारा मन्दिर है आओ इनका सम्मान करें' संगीत का संगान करते हुए मुनि श्री का स्वागत किया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा रोहिणी के अध्यक्ष संजीव जैन एवं तेरापंथी महिला मण्डल उत्तर दिल्ली की अध्यक्षा इंद्रा सुराणा ने भावभरे उद्गार व्यक्त किये। कार्यक्रम का कुशल संचालन पराग जैन ने किया।

सप्त दिवसीय CPS कार्यशाला एवं दीक्षांत समारोह

मैसूर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के तत्वावधान में सीपीएस अकैडमी फॉर लीडरशिप एंड एक्सीलेंस द्वारा आयोजित Confident Public Speaking (CPS)की 7 दिवसीय कार्यशाला का दीक्षांत समारोह एवं ग्रेजुएशन सेरेमनी तेरापंथ भवन, मैसूर में अत्यंत गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम की अध्यक्षता अभातेयुप राष्ट्रीय संगठन मंत्री रोहित कोठारी ने की। मुख्य अतिथि के रूप में उम्मेद राज जैन उपस्थित रहे। कार्यक्रम में राष्ट्रीय प्रोविजनल ट्रेनर मोनिका गांधी, CPS राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी, राष्ट्रीय सहप्रभारी सोनू डागा, तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रकाश दक, तेयुप मैसूर शाखा प्रभारी, विकास बांठिया सहित अनेक गणमान्य महानुभावों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ अध्यक्ष रोहित कोठारी द्वारा घोषणा के साथ हुआ। तत्पश्चात तेयुप मैसूर द्वारा विजयगीत से मंगलाचरण प्रस्तुत किया गया। इसके उपरांत रोहित कोठारी ने श्रावक निष्ठापत्र का वाचन करवाया एवं स्वागत वक्तव्य दिया। तेयुप मैसूर अध्यक्ष प्रमोद मुणोत ने सभी अतिथियों एवं उपस्थितजनों का स्वागत करते हुए CPS एवं तेयुप मैसूर की गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण 7 दिवसीय CPS कार्यशाला के 25 प्रतिभागियों की प्रस्तुतियां रही। सभी प्रतिभागियों को एक-एक विषय प्रदान किया गया, जिस पर उन्होंने अपने सात दिनों के अनुभव, समझ एवं आत्मविश्वास के साथ प्रभावशाली भाषण प्रस्तुत किए। प्रतिभागियों की प्रस्तुति ने सभी उपस्थितजनों को अत्यंत प्रभावित किया। तेयुप मैसूर शाखा प्रभारी श् विकास बांठिया ने अपने वक्तव्य में युवाओं के व्यक्तित्व विकास में CPS की भूमिका को सराहा। तेरापंथ सभा अध्यक्ष प्रकाश दक ने सभी प्रतिभागियों के प्रति मंगलकामनाएं प्रेषित की। मुख्य अतिथि CA श्री उम्मेद राज जैन ने CPS कक्षाओं की महत्ता बताते हुए युवाओं को इस प्रकार की कार्यशालाओं से जुड़ने हेतु प्रेरित किया। अंत में रोहित कोठारी ने मैसूर परिषद की सराहना करते हुए प्रदान सभी प्रतिभागियों के उज्ज्वल भविष्य की मंगलकामनाएं प्रेषित की। उन्होंने अभातेयुप के विभिन्न आयामों की जानकारी देते हुए युवाओं को नशामुक्ति का प्रेरणादायी संदेश भी प्रदान किया। सभी प्रतिभागियों को प्रमाण पत्र प्रदान कर प्रोत्साहित किया गया।

'कैसे भरे रिश्तों में मिठास' प्रबोधन कार्यक्रम का हुआ सफल आयोजन

टॉलीगंज।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेशकुमार जी ठाणा 3 के सानिध्य में 'कैसे भरे रिश्तों में मिठास' कार्यक्रम का आयोजन श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा, टॉलीगंज द्वारा बादाम तल्ला स्थित पूनमचंद विजयराज जी नखत के निवास स्थल रामसंपत पर हुआ। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य वक्ता बसंत पारख आर्बिट ग्रुप थे। इस अवसर पर अच्छी संख्या में श्रद्धालु श्रावक -श्राविकाएँ उपस्थित थे। कार्यक्रम में उद्बोधन प्रदान करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा - दुनिया में रिश्तों का बहुत बड़ा मूल्य है। रिश्तों की मिठास जीवन को आनंद से सराबोर कर देती है। रिश्तों की कड़वाहट जीवन की सरसता को हर लेती है। इंसान की सुख-शांति व मानसिक प्रसन्नता में रिश्तों की भी अहम भूमिका हो सकती है। रिश्तो कही मिठास को बढ़ाने एवं बरकरार रखने के लिए भरोसा, विश्वास, मधुर वाणी सहिष्णुता, नम्रता सामंजस्यता संयम, प्रेम-स्नेह, सेवा सहयोग, समर्पण, नेतृत्व के प्रति आस्था, कृतज्ञता आदि गुणों का सम्यक विलास बहुत जरूरी है।

उन्होंने आगे कहा- वाणी की शिष्टता में रिश्तों की मिष्टता छिपी हुई है। जिहवा संभली तो जीवन संभला। स्वस्थता व प्रसन्नता की पृष्ठभूमि व तनाव मुक्त रहने की दवा है सहिष्णुता। जो सहता है वह रहता है। हर क्षेत्र में सहिष्णुता रखने वाला व्यक्ति रिश्तो में मधुरता ला सकता है। परिवार में स्नेह भाव, विनय वात्सल्य होता है तो मधुरता बढ़ती है। जीवन एक पुष्प है तो, सामंजस्य उसकी सौरभ है। जहां आश्ता होता है वहाँ रिश्तों में खटास आती है। एक-दूसरे को समझने और सहन करने वाला रिश्तों में मिठास भर सकता है। इस अवसर पर मुनि परमानंद ने कहा- मीठे बोल की दो बूंद रिश्तों को पोलियों से बचा सकती है। इस अवसर पर मुनि कुणाल कुमारजी ने सुमधुर गीत का संगान किया। मुख्य वक्ता बसंत जी पारख ने कहा रिश्तों को महसूस किया जा सकता है। जो रिसता है वह रिश्ता है। रिश्तों को गांठना व घोलना पड़ता है। स्वार्थ व निर्लजता को तज देने पर निर्मलता आने से रिश्तों में अपने आप मिठास आ जाती है। इस अवसर पर स्वागत भाषण टॉलीगंज सभा के अध्यक्ष अशोक पारख ने दिया।

कमल सेठिया ने बसंत पारख का परिचय प्रस्तुत किया। तेरापंथी सभा व तेरापंथ युवक परिषद टॉलीगंज द्वारा सामूहिक स्वागत गीत प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, टॉलीगंज की बहनों के मंगल संगान से हुआ। आभार ज्ञापन मंत्री राजीव जैन ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। सभा द्वारा मुख्य वक्ता का सम्मान किया गया। कार्यक्रम को सफल बनाने में कार्यकर्ताओं व नखत परिवार का विशेष योगदान रहा।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
25 मई - 31 मई 2026

तेरापंथ-मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

पूर्वांचल कोलकाता।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के सुशिष्य मुनि जिनेश कुमार जी ठाणा-3 के सान्निध्य में जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के निर्देशन में तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन जैन श्वेताम्बर तेरापंथी सभा (कलकत्ता-पूर्वांचल) ट्रस्ट द्वारा अथर्व बैंक्वेट में किया गया। कार्यशाला में प्रशिक्षक उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा थे।

कार्यशाला में उपस्थित धर्म श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए मुनि जिनेश कुमार जी ने कहा- जीव सुनकर ही कल्याण को जानता है सुनकर ही पाप को जानता है। दोनों को सुनकर ही जाने जाते हैं। जो श्रेय है उसका आचरण करना चाहिए। तेरापंथ के आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु ने श्रेय के पथ बढ़ने, चलने के लिए धर्मक्रांति की। वह धर्म क्रांति ही तेरापंथ के रूप में विख्यात हुई। उनका ज्ञान निर्घम अग्नि सा निर्मल, दर्शन ध्रुव तारे सा निश्चल और चारित्र स्फटिक सा उज्ज्वल था। वे प्रज्ञा सम्पन्न कुशाग्र बुद्धि के धनी, क्रांतिकारी महापुरूष थे। वे तार्किक दार्शनिक आगमवेत्ता, व्यवहार कुशल, आचार सम्पन्न व पापभीरू थे। वे अनुशासित, आत्मार्थी व जिन -वाणी के प्रति समर्पित थे। उन्होंने आचार के साथ विचार क्रांति भी की और व्यवस्था क्रांति भी की। तेरापंथ को सिर्फ माने ही नहीं अपितु उसको जाने और जीएं। यह प्रभु महावीर का पंथ है। तेरापंथ महावीर की अहिंसा का महाभाष्य है। तेरापंथ : मेरापंथ कार्यशाला के माध्यम से सभी लोग तेरापंथ के विचार दर्शन को समझने का प्रयत्न करें। मुनि जिनेश कुमार जी ने कार्यशाला में संभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। मुनि कुणाल कुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। इस अवसर पर अहमदाबार से समागत उपासक प्राध्यापक डालिमचंद नौलखा ने संभागियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। उन्होंने तेरापंथ के सिद्धान्तों को विस्तार से समझाया। स्वागत भाषण पूर्वांचल सभा के अध्यक्ष संजय जी सिंघी ने दिया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल की बहनों के मंगलाचरण से हुई। आभार ज्ञापन सभा के मंत्री पंकज डोसी ने दिया। कार्यक्रम का संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। कार्यशाला में कुल 245 भाई-बहिनों ने हिस्सा लिया। कार्यशाला को सफल बनाने में कार्यकताओं का महत्वपूर्ण योगदान रहा।

तेरापंथ की मौलिक मर्यादाओं का संरक्षण प्रत्येक तेरापंथी परिवार की जिम्मेदारी है

आदर्श नगर, सवाई माधोपुर।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी महासभा कोलकाता के निर्देशानुसार स्थानीय श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथी सभा द्वारा तेरापंथ : मेरा पंथ कार्यशाला का आयोजन गंगाशहर से समागत तेरापंथ युवक रत्न राजेन्द्र सेठिया के मार्गदर्शन में तेरापंथ भवन आदर्श नगर में हुआ।

कार्यशाला का शुभारंभ सभा अध्यक्ष कमलेश जैन एडवोकेट द्वारा प्रस्तुत स्वागत भाषण से हुआ। स्थानीय तत्वज्ञ श्रावक चंद्रप्रकाश जैन ने कार्यशाला के मार्गदर्शक राजेन्द्र सेठिया का परिचय प्रस्तुत किया व कार्यशाला के उद्देश्यों की जानकारी दी गई।

कार्यशाला के मार्गदर्शक एवं मुख्यवक्ता राजेन्द्र सेठिया ने कार्यशाला के विभिन्न सत्रों में तेरापंथ का उद्भव भगवान ऋषभ से आचार्य भिक्षु तक, साध्य और साधन की मीमांसा, लौकिक दान और लोकोत्तर दान में भेद, लौकिक दया और लोकोत्तर दया में भेद, पुण्य का स्वतंत्र बंध मान्य नहीं, द्रव्य पूजा और भाव पूजा की भेदरेखा जैसे मौलिक बिंदुओं पर विस्तार से चर्चा प्रस्तुत की व प्राप्त जिज्ञासाओं का समाधान भी प्रस्तुत किया।

कार्यशाला के अंतिम सत्र में संभागीयों की ओर से युवक परिषद अध्यक्ष भीकम जैन ने कार्यशाला के माध्यम से सीखे गए अनुभवों की जानकारी दी।

प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन

टोहाना।

प्रेक्षा फाउंडेशन के निर्देश अनुसार तथा प्रेक्षा वाहिनी टोहाना के तत्वावधान में मई माह की प्रेक्षाध्यान कार्यशाला का आयोजन स्थानीय तेरापंथ भवन में किया गया। इसके पश्चात सामूहिक रूप से प्रेक्षा गीत का संगान किया गया। इस अवसर पर सभा के मंत्री सुभाष जैन ने कहा कि प्रेक्षा ध्यान आत्म अवलोकन का उत्कृष्ट अवयव है। प्रेक्षाध्यान से आत्मा के द्वारा आत्मा का दर्शन होता है। इससे मानसिक एवं शारीरिक रोगों का क्षय होता है तथा आत्मा और शरीर निरामय बनते हैं। इस अवसर पर प्रेक्षा ध्यान के कई प्रयोग किए गए जिसमे कायोत्सर्ग, दीर्घ श्वास प्रेक्षा, अनुप्रेक्षा, महाप्राण ध्वनि तथा प्राणायाम के प्रयोग किए गए। प्रेक्षाध्यान आचार्य महाप्रज्ञ जी द्वारा प्रदत्त एक मानव कल्याण का उपक्रम है। प्रेक्षा ध्यान से लाखों लोगों ने तनाव मुक्त जीवन जीने की कला सीखी है। इस अवसर पर आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी के रिकॉर्डेड प्रवचनों का भी श्रवण किया गया। इस अवसर पर 10 साधकों ने प्रेक्षा ध्यान के प्रयोग किये जिसमे प्रेक्षा वाहिनी संवाहिका उषा जैन,महिला मंडल अध्यक्ष आरती जैन, पूनम जैन, प्रीति जैन, सरोज जैन, वर्षा जैन, रजनी जैन, मंजू जैन तथा सभा के मंत्री सुभाष जैन एवं रामभज ने भाग लिया।

माइन्ड कूल से ही लाइफ होगी ब्यूटीफूल

राघवेंद्रा कालोनी, हैदराबाद।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमणजी के सुशिष्य मुनि दीप कुमारजी ठाणा -2 के सान्निध्य में 'माइन्ड कूल, लाइफ ब्यूटीफूल' प्रवचन लाफिंग लॉटस प्रि स्कूल में का आयोजन तेरापंथी परिवार-राघवेन्द्रा कॉलोनी द्वारा आयोजित किया गया। मुनि दीप कुमारजी ने कहा- आज का इंसान बाहर से स्मार्ट है। लेकिन अन्दर से डिस्मार्ट है। फेश पर फिल्टर है लेकिन दिमाग में हीटर है। मोबाइल फास्ट है लेकिन लाइफ फरस्टेरटेड है और इसलिए आज सबसे जरूरी विषय है- 'माइन्ड कूल, लाइफ ब्यूटीफूल'। अगर माइन्ड कूल है तो, सिचुवेशन कितनी भी कठिन हो, लाइफ फिर भी ब्यूटीफूल लगती है।

माइन्ड को सबसे ज्यादा जलाता है ओवरथिंकिंग। जो हुआ नहीं, उसी की चिंता। जो चला गया उसी का दुःख। जो... मिलेगा नहीं उसी की बेचैनी और जो मिला है उसकी कोई वेल्यू नहीं। माइन्ड कूल रखने का सबसे बड़ा मंत्र है-लेट गो। कुछ लोग पुरानी। बातों को पकड़ कर बैठे रहते हैं। पुराना अपमान, पुराना धोखा, पुरानी एक गलती और फिर कहते है माइन्ड में शांति नही है। मुनिश्री ने आगे कहा- लाइफ ब्यूटीफूल बनाने के लिए महंगी कार नहीं, कूल माइंड चाहिए क्योंकि माइन्ड कूल है तो छोटी-सी वस्तु भी खुशी देती है। माइन्ड हिट में हो तो महलों में भी बेचैनी रहती है। मुनि ने संकल्पों को करने की भी प्रेरणा दी। मुनि काव्य कुमारजी ने कहा- चेहरे पर स्टाइल है, हाथ में महंगा मोबाइल है, सोशल मीडिया पोस्ट पर फोटो में बढ़िया स्माइल है लेकिन भीतर में बेचैनी है,निराशा है,अशांति है। Comparison और Competition इन दोनों ने आज व्यक्ति के भीतर बहुत ज्यादा अशांति पैदा की है। विषय पर प्रवचन दोनों संतों का बहुत प्रेरणादाई, प्रभावक रहा। आभार ज्ञापन तिलोकचन्द सिपानी ने किया।

वर्षीतप पारणा का हुआ आयोजन

कोयंबतूर।

वर्षीतप पारणे का कार्यक्रम ग्लोबस नक्षत्रा अपार्टमेंट के क्लब हाउस में साध्वी सिद्धप्रभाजी आदि ठाणा चार के सानिध्य में आयोजित किया गया ।

साध्वी आस्थाप्रभाजी ने ओम् ऋषभाय नमः के जप से कार्यक्रम की शुरूआत की । ग्लोबस नक्षत्रा अपार्टमेंट की बहनों द्वारा सुमधुर मंगलाचरण की प्रस्तुति हुई । तत्पश्चात सभा अध्यक्ष देवीचंद मंडोत ने तपस्वी बहनो एवं परिषद में पधारे सभी भाई-बहनों का स्वागत अभिनंदन किया । महिला मंडल अध्यक्षा रूपकला भंडारी, तिरुपुर से विनोद भंसाली, उपासिका बहन सुशीला बाफना, साध्वी दीक्षा प्रभाजी के भाई वैभव ने अपनी भावपूर्ण भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम के दौरान मुमुक्षु संयम बाफना ने भी कहानी के माध्यम से अभिव्यक्ति दी व तत्पश्चात तेरापंथ सभा कोयंबटूर द्वारा मुमुक्षु संयम बाफना का माला एवं शॉल से अभिनंदन किया गया । साध्वी दीक्षा प्रभा जी के वर्षीतप के उपलक्ष में पूज्य प्रवर एवं साध्वी प्रमुखा विश्रुतविभा जी का संदेशवाचन तेरापंथ सभा के उपाध्यक्ष धनराज सेठिया ने किया। साध्वी मलयशाजी, साध्वी आस्थाप्रभा जी एवं साध्वीश् दीक्षाप्रभा जी ने मधुर गीतिका का संगान किया।

जीवन और व्यापार में वास्तु से चमत्कार पर कार्यक्रम आयोजित

दिल्ली।

अध्यात्म साधना केंद्र में 'जीवन और व्यापार में वास्तु से चमत्कार' पर टीपीएफ दिल्ली ने कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम में शासन श्री मुनि विमल कुमारजी एवं बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी आदि ठाणा 7 का सानिध्य प्राप्त हुआ। टीपीएफ दिल्ली की अध्यक्ष कविता बरड़िया ने सभी का स्वागत किया और वास्तु के महत्व के बारे में बताया।मुख्य अतिथी कल्याण परिषद के संयोजक केलास चन्द्र जैन रहे एवं गेस्ट आफ आनर दिल्ली सभा अध्यक्ष एवं आचार्य श्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, दिल्ली के महामंत्री सुखराज सेठिया रहे। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता अनुज जैन रहे। अनुज जैन को वास्तु के क्षेत्र में करीब 20 वर्षों से ज्यादा का अनुभव है और हीलिंग को लेकर भी उनका ज्ञान काफी है। अनुज जैन ने पहले वास्तु क्यों जरूरी है इसके बारे में बताया, साथ ही उन्होंने व्यापार में उन्नति के लिए किन वास्तु के बारे में ध्यान रखा जाए, उसके टिप्स भी दिए। इसके साथ ही उन्होंने 45 मिनट का हीलिंग का सेशन भी लिया। कार्यक्रम के आखिर में सवाल-जवाब का सिलसिला भी चला, जिसमें लोगों ने वास्तु के बारे में अपनी जिज्ञासाएं शांत की। कार्यक्रम का संचालन टीपीएफ दिल्ली के कोषाध्यक्ष दीपक कुचेरिया ने किया। वहीं गौतम डुंगरवाल ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम के कन्वेनर टीपीएफ दिल्ली की सह-कोषाध्यक्ष अर्पणा दुगड़ और गौतम डुंगरवाल रहे। उपाध्यक्ष प्रभात खटेड़, मंत्री हिमांशु कोठारी, सहमंत्री वेभव जैन, चिकित्सा प्रभारी पुजा जैन आदि का विशेष सहयोग रहा।

Conclave of Religions Mumbai 2026 का आयोजन

मुंबई।

इस सम्मेलन का उद्देश्य विभिन्न धर्मों के बीच संवाद और समझ को बढ़ावा देना था।

यह आयोजन मुंबई में इंटर रिलीजियस सॉलिडरिटी काउंसिल द्वारा मुंबई के jw marriot hotel में आयोजित किया गया जिसमें संस्था के संयोजक प्रभु केशव चंद्र दास ,विचारक इरफान इंजीनियर,दिल्ली के पूर्व गवर्नर नजीब जंग, मुख्य वक्ता टी एम कृष्णा, तिब्बती विचारक तेनजिन डेमचो, हजरत हाजी सैय्यद अंबर चिश्ती , जैन स्कॉलर मनीष मोदी द्वारा 'संकट के युग में धार्मिक नैतिकता पर पुनर्विचारः पवित्र पृथ्वी, पवित्र मानवता' एवं पर्यावरण के संबंध में हमारा दायित्व विषय पर महत्वपूर्ण विचार प्रस्तुत किए। इस सम्मेलन में जैन ,ईसाई ,बौद्ध, मुस्लिम ,सनातन ,इस्कॉन, क्रिश्चियन ,पारसी , सिख समाज के अनेक विशिष्ट व्यक्ति सम्मिलित हुए।

इस अवसर पर अणुविभा उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, अंतरराष्ट्रीय संगठन मंत्री दीपक डागलिया ,अणुव्रत समिति मुंबई अध्यक्ष रमेश सोनी, घेवरचंद सुराणा ने समारोह में उपस्थित विभिन्न धर्मगुरुओं से अणुव्रत आंदोलन के विचारों एवं गतिविधियों से अवगत कराया। इस आयोजन का उद्देश्य था कि विभिन्न धर्मों के लोग एक साथ आएं और अपने अनुभवों को साझा करें, जिससे समाज में शांति और समृद्धि बढ़ सके।

वक्तृत्व कला की ओर बढ़ा आत्मविश्वास का कदम

राजाजीनगर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के निर्देशन में तेरापंथ युवक परिषद राजाजीनगर द्वारा आयोजित 'कॉन्फिडेंट पब्लिक स्पीकिंग (CPS)' की सप्त दिवसीय कार्यशाला का शुभारंभ आज तेरापंथ भवन, राजाजीनगर में उत्साह एवं उमंग के साथ हुआ। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र के सामूहिक मंगल उच्चारण से हुआ। तेयुप अध्यक्ष जितेश दक ने उपस्थित सीपीएस प्रशिक्षक निहारिका सिंघी एवं सभी प्रतिभागियों का आत्मीय स्वागत करते हुए कार्यशाला हेतु मंगलकामनाएं प्रेषित कीं। तेयुप मंत्री अनिमेष चौधरी ने प्रशिक्षक निहारिका सिंघी का प्रभावी परिचय प्रस्तुत किया।

कार्यशाला के प्रथम दिवस पर प्रशिक्षक निहारिका सिंघी ने परिचय सत्र के माध्यम से प्रतिभागियों को सहज वातावरण प्रदान करते हुए वक्तृत्व कला के महत्व को विस्तार से समझाया। उन्होंने बताया कि एक प्रभावशाली वक्ता के लिए केवल शब्द ही नहीं, बल्कि व्यक्तित्व, परिधान, मंच पर खड़े रहने का तरीका, संवाद शैली एवं श्रोताओं को आकर्षित करने की क्षमता भी अत्यंत आवश्यक होती है। उन्होंने प्रतिभागियों को आत्मविश्वास के साथ मंच पर बोलने, अपने भीतर छिपे भय को पहचानकर उसे दूर करने तथा प्रभावी संवाद स्थापित करने की विभिन्न तकनीकों से अवगत कराया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों में विशेष उत्साह एवं सीखने की जिज्ञासा देखने को मिली।

इस अवसर पर सीपीएस के राष्ट्रीय प्रभारी दिनेश मरोठी, राष्ट्रीय सहप्रभारी सोनू डागा, भूतपूर्व राष्ट्रीय प्रभारी एवं वर्तमान राष्ट्रीय सलाहकार सतीश पोरवार, ABTMM राष्ट्रीय सहमंत्री एवं ज़ोनल ट्रेनर मधु कटारिया, तेयुप राजाजीनगर के निवर्तमान अध्यक्ष कमलेश चौरडिया, उपाध्यक्ष जयंतीलाल गांधी, अजिंक्या चौधरी, आशिष मांडोत, भावेश बोथरा, सीपीएस ज़ोनल ट्रेनर आर्यन गोलेच्छा, सीपीएस प्रोविजनल ट्रेनर हितेष चोपड़ा,प्रमित गंग,संदीप पोखरणा सहित अनेक गणमान्य सदस्यों की गरिमामयी उपस्थिति रही। कार्यक्रम का सफल संचालन तेयुप मंत्री अनिमेष चौधरी ने किया।

❖ आदमी को पुण्य की भी इच्छा नहीं करना चाहिए। उसे हेय और उपादेय को अच्छी तरह जानकर हेय को छोड़ने और उपादेय को ग्रहण करने का प्रयत्न करना चाहिए। — आचार्य श्री महाश्रमण

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

जैन संस्कार विधि

नामकरण संस्कार

■ **सूरत।** सुजानगढ़ निवासी सूरत प्रवासी संतोष देवी स्व. ताराचंद डोसी के पुत्र-पुत्रवधू दीपक पिया डोसी के प्रांगण में कन्या रत्न का जन्म हुआ। जिसका नामकरण संस्कार जैन संस्कार विधि से संस्कारक विनीत सामसूखा, नरेन्द्र भंसाली ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार सेसानन्द संपन्न करवाया। नवजात कन्या का नाम भावी घोषित किया।

■ **रायपुर।** लाडनूं निवासी, रायपुर प्रवासी नरपतसिंह - सरोज देवी दुगड़ के सुपुत्र-सुपुत्रवधु नमीष- हरप्रीत दुगड़ की सुपुत्री के नामकरण संस्कार का आयोजन तेरापंथ युवक परिषद्, रायपुर के तत्वावधान में जैन संस्कार विधि द्वारा संस्कारक अनिल दुगड़, सूर्य प्रकाश बैद श्रद्धा, संयम एवं मंगल भावना के साथ सम्पन्न कराया।

नूतन गृह प्रवेश

■ **सूरत।** भीनसर (बीकानेर) निवासी सूरत प्रवासी शिखरचंद सेठिया के नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक मनीष मालू, अरविन्द बाफना, नरेन्द्र भंसाली ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार सानंद सम्पन्न करवाया।

सूरत। जोरावरपुरा (नोखा) निवासी सूरत प्रवासी फतेहचंद जी बुच्चा के सुपुत्र पवन कुमार बुच्चा का नूतन गृह प्रवेश जैन संस्कार विधि से संस्कारक विजयकांत खटेड, प्रकाश डाकलिया, धर्मचंद सामसूखा, सुशील गुलगुलिया, मनीष कुमार मालु, अभय बोथरा, पंकज बुच्चा ने सम्पूर्ण विधि व मंगलमंत्रोच्चार सानंद सम्पन्न करवाया।

विनम्रता एवं सहजता के प्रतिमान हैं आचार्य महाश्रमण

दिल्ली।

आचार्य श्री महाश्रमण के जन्मोत्सव, पट्टोत्सव एवं दीक्षा दिवस के उपलक्ष्य में भव्य आयोजन किया गया। शासन मुनि विमल कुमार जी एवं बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी के सान्निध्य में आचार्य महाश्रमण अभिवंदना समारोह अध्यात्म साधना केंद्र परिसर के महाप्रज्ञ सभागार में आयोजित हुआ।

मुनि उदित कुमार जी ने अपने उद्बोधन में कहा— आचार्य महाश्रमण जी का व्यक्तित्व अगाध विनम्रता और अद्भुत सहजता का वह धरातल है, जहाँ अहंकार का पूर्ण विसर्जन हो जाता है। एक महान आचार्य के रूप में उनकी सौम्यता यह सिद्ध करती है कि शिखर पर पहुँचकर भी जड़ों से जुड़े रहना ही वास्तविक महानता है। उनका सहज स्वरूप और वात्सल्यमयी दृष्टि प्रत्येक जिज्ञासु के अंतर्मन को शीतलता प्रदान करती है। वे केवल पथ-प्रदर्शक नहीं, अपितु मानवीय संवेदनाओं और सरल जीवन पद्धति के जीवंत प्रतिमान हैं। शासनश्री मुनि विमल कुमार जी ने अपने संक्षिप्त विचारों में कहा कि आचार्य महाश्रमण जी का जीवन अनुशासन, संयम और करुणा का अनुपम समन्वय है। उनका मार्गदर्शन व्यक्ति को आत्मविकास की दिशा में प्रेरित करता है और समाज में नैतिक मूल्यों के सुदृढ़ीकरण का आधार बनता है। मुनि मधुर कुमार जी, मुनि अक्षय कुमार जी, मुनि धन्य कुमार जी ने भी अपने प्रासंगिक विचार रखें। कार्यक्रम का प्रारंभ दक्षिण दिल्ली महिला मंडल के मंगलाचरण (संगान) से हुआ। पूर्वी दिल्ली महिला मंडल ने भी भक्तिमय गीत की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर आचार्य महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति के अध्यक्ष कन्हैया लाल पटावरी, तेरापंथ सभा दिल्ली के अध्यक्ष सुखराज सेठिया, दक्षिण दिल्ली सभा के अध्यक्ष सुशील पटावरी, दक्षिण दिल्ली महिला मंडल से सरोज भूतोडिया एवं अणुव्रत समिति दिल्ली से बाबूलाल जी गोलछा,कल्पना सेठिया ने अपने संभाषण-कविता के माध्यम से अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

आभार ज्ञापन तेरापंथ भवन व्यवस्थापक संदीप डूंगरवाल ने किया तथा कार्यक्रम का कुशल संचालन सभा मंत्री प्रमोद घोड़ावत ने किया।

बच्चों को धार्मिक ज्ञान के साथ सुपात्र दान का भी महत्त्व सिखाएं माता-पिता

वनियमबाड़ी।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमार, नचिकेता मुनि आदित्य कुमार का वनियमबाड़ी जैन स्थानक में पदार्पण हुआ। श्रावक समाज को प्रवचन देते हुए मुनि श्री ने कहा जैन धर्म में दान का विशेष महत्व है।

प्रत्येक श्रावक के भीतर सुपात्र दान देने की भावना रहनी चाहिए। क्योंकि जैन आगमों में मोक्ष के चार मार्ग बताए गए हैं: दान,शील,तप और भाव। इसमें सबसे पहला है दान देना। मुनि श्री ने दान का महत्व उजागर करते हुए आगे कहा दान देने से शुभ पुण्य कर्म का संचय होता है। अशुभ कर्मों की निर्जरा होती है इसलिए इसे मोक्ष कारक भी कहा गया है।

मुनिश्री ने प्रेरणा देते हुए कहा हर जैन श्रावक का प्रथम कर्तव्य है कि वह अपने बच्चों को धार्मिक ज्ञान के साथ दान देने के संस्कार जरूर भरें। संयमी गुरुजनों को सुपात्र भिक्षा दान देना जरूर सिखाएं। नचिकेता मुनि आदित्य कुमार ने नमस्कार महामंत्र गीत प्रस्तुत किया। दिलीप बाफना ने स्वागत भाषण किया। तेरापंथ महिला मंडल वनियमबाड़ी से खुशबू सेठिया, मधु दुगड़, सपना आंचलिया, वीना बाफना, वर्षा दुगड, एकता बाफना ने स्वागत गीत प्रस्तुत किया। ज्ञानशाला के विद्यार्थी तन्मय दुगड विहान, नैतिक, रित्विक, सांची, दीतिया, आराध्या, छवि, द्युती जैन आदि ने मनमोहक प्रस्तुति दी। तिरूपत्तूर से विकास संचेती सुशीला संचेती, वनियमबाड़ी स्थानकवासी समाज से मंत्री तेजराज गुलेछा, रिखब सुराणा, भंवरलाल सिंघवी, मीठालाल टोडरवाल, प्रसन्न सुराणा आदि ने मुनि श्री का स्वागत किया।

संबोधि

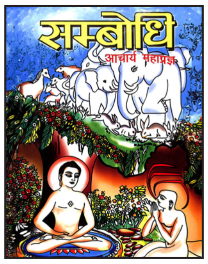

परिशिष्ट

-आचार्यश्री महाप्रज्ञ

श्वास पर चित्त को एकाग्र करने का दूसरा फलितार्थ होता है-शरीर और स्वयं-दोनों के पृथक्त्व का बोध। इसके आगे श्वास की पृथक्ता भी प्रतीत होगी। मैं अलग हूं, संसार अलग है और शरीर अलग है। निरालंबन ध्यान में इसका महत्त्वपूर्ण स्थान है। भेद-विज्ञान साधना का प्रमुख ध्येय है। शरीर और चेतना के पृथक् बोध के पश्चात् आत्म-ध्यान असहज नहीं होता। यदि हम थोड़ी-सी कुशलता संपादन कर लें तो सभी एकाग्रता के साधनों से यह प्रतिफलित हो सकता है। ध्याता और ध्येय यह द्वैत सबमें उपस्थित रहता है। सिर्फ उस दूरी को देखना है। ध्येय पृथक् है, मैं पृथक् हूं, ध्यान को शनैः शनैः बाहर से हटाकर ध्याता की तरफ ले जाने से क्रमशः वह स्पष्ट होने लगता है और बाहर के ध्येय को छोड़ने में भी कठिनाई नहीं होती। केवल बाहर को पकड़कर उसमें ही चित्त को नियोजित करने से वह थोड़ा-सा असाध्य बन जाता है। साधना सिर्फ लक्ष्य को साधने के लिए है। वह मात्र साधना है। साध्य-प्राप्ति के बाद उसे पकड़े रखना बुद्धिमत्ता नहीं होती। किन्तु बाहर की एकाग्रता का आनंद इतना प्रिय हो जाता है तब अंदर से योग होना सहज नहीं रहता। ध्येय की च्युति न हो, यह स्मृत रहना चाहिए।

पदस्य ध्यान

पदस्थ ध्यान शब्दानुसारी होता है। उसमें वर्षा, मातृका मंत्र तथा बीजाक्षरों का प्राधान्य रहता है। शब्द के माध्यम से अशब्द में प्रवेश का यह द्वार है। इसलिए योग के अंतर्गत इसकी गणना की गई है। तंत्र साहित्य में वर्ण का बहुत बड़ा महत्त्व है। वहां वर्ण के पर्यायवाची शब्द हैं-माता, शक्तियां, देवियां, रश्मि और कला। प्रत्येक वर्ण शक्तियुक्त है। तंत्रों में उनकी शक्तियों का वर्णन किया है। परात्रिंशिका में सकार को तीसरा ब्रह्म कहा है। 'स' वर्ण के द्वारा संसार स्फुट से प्रकाशित होता है, प्रत्यभिज्ञा शास्त्र में यह उल्लेख है। शब्द और अर्थ में अविनाभावी संबंध है। कालीदास ने शब्द और अर्थ को शिव और पार्वती के रूप में वन्दना की है। शब्दों का संहारक और उन्नायक रूप आज के वैज्ञानिक युग में अस्पष्ट नहीं है। शब्दशक्ति का प्रभाव मनुष्य से लेकर पेड़ पौधे तक काम कर रहा है। पौधे और पशुओं पर होने वाली संगीत-लहरियों के प्रभाव की घटनाएं हमने पढ़ी है, सुनी हैं। पशु अधिक मात्रा में दूध देने लगते हैं। पौधों का विकास संवर्द्धन शीघ्र होता है। अशुभ शब्दों का प्रभाव इसके विपरीत होता है।

रंग

भारतीय मनीषियों ने रंगों के महत्त्व की भी खोज की है। मातृका विवेक में अकार के संबंध में कहा है-अकार सर्व देवों वाला है, रक्त वर्ण वाला है, सबको वश करने वाला है। स्पर्श संज्ञा वाले 'क' से 'म' पर्यन्त अक्षर विद्रुम के समान वर्ण वाले हैं। 'य' से 'क्ष' तक के पीत वर्ण वाले हैं। किन्तु एक 'क्ष' अरुण वर्ण का है। कुछ लोगों का ऐसा भी मत है कि सभी वर्ण शुक्ल वर्ण वाले होते है।

ऋषि और छन्द

प्रत्येक वर्ण का एक-एक मंत्र माना गया है। इसलिए उसका अलग-अलग ऋषि, छन्त्र, देवता, शक्ति आदि होने का उल्लेख 'शारदा तिलकतंत्र पदार्थादर्श टीका में है।

मातृका

वर्णमाला के समुदित रूप को मातृका कहते हैं। तंत्र के अनेक ग्रंथों में इसका उल्लेख मिलता है। मातृका की महिमा का वर्णन भी कम नहीं है। तंत्र में कहा है- 'न विधा मातृका परा' मातृका से परे और कोई विद्या नहीं है। महादेवी के रूप में उसकी वन्दना की गई है। 'मन्त्राणां मातृभूता च, मातृका परमेश्वरी' यह मातृका मंत्रों की माता के समान परमेश्वरी है। तंत्र शास्त्रों में मंत्र माता के रूप में सम्मानित है। मातृकाओं के सात या आठ वर्ग का उल्लेख अधिकारी व्यक्तियों ने किया है– अ, क, च, ट, त, प, य, श।

जैन साहित्य में भी मातृकाओं के ध्यान की चर्चा है। आचार्य शुभचन्द्र ने ज्ञानार्णव में कहा है–

'ध्यायेदनादिसिद्धान्तप्रसिद्धां वर्णमातृकाम्।
निःशेषशब्दविन्यासजन्मभूमिं जगन्नुताम्।।'

अनादि सिद्धांत में प्रसिद्ध मातृका 'स्वर और व्यंजन' का चिंतन करें। क्योंकि यह वर्णमातृका संपूर्ण शब्द-विन्यास की जन्मभूमि और विश्ववंदनीय है। (क्रमशः)

श्रमण महावीर

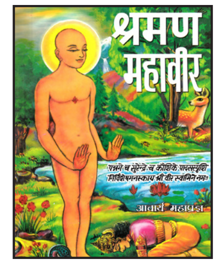

समता के तीन आयाम

'फिर आप सम्राट की ओट में मुझे क्यों रोकना चाहते हैं?'

'अच्छा वत्स ! तुम भगवान् की शरण में जाओ। तुम्हारा कल्याण हो । निर्विघ्न हो तुम्हारा पथ।'

सुदर्शन माता-पिता का आशीर्वाद ले घर से चला। मित्रों ने एक बार फिर रोका और टोका उन सबने, जिन्हें इस बात का पता चला। पर सत्याग्रही के पैर कब रुक सके हैं? उसके पैर जिस दिशा में उठ जाते हैं, वे मंजिल तक पहुंचे बिना रुक नहीं पाते। सुदर्शन अपने लक्ष्य की ओर आगे बढ़ा। वह अकेला था। उसके साथ था केवल श्रद्धा का बल। वह प्रतोली-द्वार तक पहुंचा। आरक्षिक ने उसे रोककर पूछा-

'कहां जाना चाहते हो?'

'गुणशीलक चैत्य में।'

'किसलिए?'

'भगवान महावीर की उपासना के लिए।'

'बहुत अच्छा। किन्तु श्रेष्ठिपुत्र ! इस राजपथ से जाना क्या मौत को निमंत्रण देना नहीं है?'

'हो सकता है, किन्तु मैं मौत को निमंत्रित करने नहीं जा रहा हूं।' 'यह राजपथ राजाज्ञा द्वारा अवरुद्ध है, आपको पता होगा?'

'हां, मुझे मालूम है। पर मैं जिस उद्देश्य से जा रहा हूं, वह अबाधित है। जिसका सबको भय है, उससे मैं भयभीत नहीं हूं, फिर यह राजपथ मेरे लिए क्यों अवरुद्ध होगा?'

आरक्षिक इसके उत्तर की खोज में लग गया। सुदर्शन के पैर आगे बढ़ गए। सुनसान राजपथ ने सुदर्शन के प्रत्येक पद-चाप को ध्यान से सुना। उसमें न कोई धड़कन थी, न आवेग और न विचलन । सुदर्शन राजपथ के कण-कण को ध्यान से देखता जा रहा था पर उसे सर्वत्र दिखाई दे रहा था महावीर का प्रतिबिंब। वह सुन रहा था पग-पग पर महावीर का सिंहनाद ।

राजपथ के आस-पास अर्जुन घूम रहा था। लग रहा था जैसे काल की छाया घूम रही हो। उसने सुदर्शन को आते देखा। उसे लगा जैसे कोई बलि का बकरा आ रहा है। वह सुदर्शन की ओर दौड़ा। भय अभय को परास्त करने के लिए विह्वल हो उठा। श्रद्धा और आवेश के समर की रणभेरी बज चुकी । सुदर्शन ने अपनी तैयारी पूर्ण कर ली। उसने समता की दीक्षा स्वीकार की। वह संकल्प का कवच पहन कायोत्सर्ग की मुद्रा में खड़ा हो गया। उसकी ध्यान-मुद्रा उपसर्ग का अन्त होने से पहले भग्न नहीं होगी, यह उसकी आकृति बता रही थी।

अर्जुन निकट आते ही गरज उठा- 'तुम कौन हो? तुम्हारा नाम क्या है? क्या तुम्हारे माता-पिता नहीं हैं? कोई मित्र और परामर्शक नहीं है? तुम्हें नहीं मालूम है कि यहां आने पर तुम मृत्यु के अतिथि बन जाओगे? तुम बोल नहीं रहे हो ! बड़े लापरवाह दिख रहे हो ! अब तैयार हो जाओ तुम इस मुद्गरपाणि का प्रसाद पाने के लिए।'

सुदर्शन अपने ध्यान में लीन था। वह न बोला और न प्रकंपित हुआ। अर्जुन का आवेश और अधिक बढ़ गया। उसने मुद्गर को आकाश में उछालने का प्रयत्न किया। पर हाथ उसकी इच्छा को स्वीकार नहीं कर रहे थे। वे जहां थे, वहीं स्तम्भित हो गए। अर्जुन ने अपनी सारी शक्ति लगा दी। पर उसका शरीर उसकी हर इच्छा को अस्वीकार करने लगा। उसका मनोबल टूट गया। आवेश शान्त हो गया।

अब अर्जुन केवल अर्जुन था। उसका शरीर आवेश में शिथिल हो चुका था। वह अपने को संभाल नहीं सका। वह सुदर्शन के पैरों में लुढ़क गया।

सुदर्शन ने देखा उपसर्ग शान्त हो चुका है। भय की काली घटा बिना बरसे ही फट गयी है। उसने अपनी अर्धोन्मीलित आखें खोलीं। कायोत्सर्ग संपन्न किया। उसने महावीर की स्मृति के साथ अर्जुन के सिर पर हाथ रखा उसकी मूर्च्छा टूट गई। उसके चिदाकाश में जागृति की पहली किरण प्रकट हुई। उसने जागृति के क्षण में फिर उस प्रश्न को दोहराया–

'तुम कौन हो?'

'मैं भगवान् महावीर का उपासक हूं।' (क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

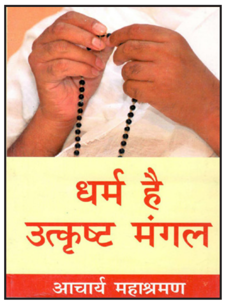

-आचार्यश्री महाश्रमण

कार्यकर्त्ता के मौलिक गुण

संस्थाओं के साथ जुड़े कार्यकर्त्ता के प्रति समाज का विश्वास होना जरूरी है। उसके लिए आवश्यक है-कार्यकर्त्ता प्रामाणिक हो। यदि उसमें प्रामाणिकता नहीं है तो कार्यकर्त्ता में सबसे बड़ी कमी रह जाती है। कार्यक्षमता होने के बावजूद अप्रामाणिकता की कोई छोटी-सी कमी यदि सामने आ जाती है तो समाज का उसके प्रति विश्वास उठ जाता है। संस्थाओं/सभाओं/ परिषदों का अपना निजी आर्थिक कोष होता है। उसमें कार्यकर्त्ता यदि कोई घोटाला जैसी बात कर दे तो वह उसके जीवन में एक लांछन लग जाता है और वह समाज का विश्वास खो देता है। इसलिए कार्यकर्त्ता में ईमानदारी और प्रामाणिकता होनी चाहिए।

मैंने एक बार किसी पत्र या पुस्तक में पढ़ा था कि बनारस विश्वविद्यालय के कुलपति थे—'नरेन्द्र देव'। एक बार वे रिक्शे में बैठकर कहीं जा रहे थे। उन्हें रिक्शे में बैठे देख एक आदमी ने कहा- कुलपति महोदय! आप रिक्शे में बैठकर यात्रा क्यों करते हैं? उन्होंने कहा- भाई! कार में यात्रा करूँ, उतना पैसा मेरे पास नहीं है।

आप क्या बात करते हैं, आप तो कुलपति हैं, यूनिवर्सिटी की ओर से आपको कार प्राप्त है, फिर आप कार का उपयोग क्यों नहीं करते?

नरेन्द्र देव ने कहा महाशय! मुझे कार मिली है, वह विश्वविद्यालय के कार्यों के लिए मिली है, निजी कार्यों के लिए नहीं। यह है प्रामाणिकता को भावना।

किसी संस्था के पदाधिकारी हो या अन्य किसी बड़े ओहदे पर कोई कार्यकर्त्ता हो, समाज उस पर विश्वास करता है, तो समाज के प्रति कार्यकर्त्ता का भी दायित्व है कि वह समाज के विश्वास को बनाए रखे। और वह तब बनाए रख सकता है जब उसके जीवन में प्रामाणिकता तथा ईमानदारी की भावना हो। समाज का एक पैसा भी व्यक्तिगत काम में कभी कहीं खर्च न हो जाए, पूरी प्रामाणिकता का ध्यान रखे। अतः कार्यकर्त्ता का चौथा मौलिक गुण है-प्रामाणिकता।

व्यक्ति जिस क्षेत्र में काम करता है उस क्षेत्र की दक्षता, कार्यक्षमता उसमें होनी जरूरी है। किसी संस्था का पदाधिकारी है तो संस्था का संचालन करने की दक्षता उसमें होनी चाहिए। दक्षता निसर्गतः भी होती है और अर्जित भी। यादि व्यक्ति में निसर्गतः क्षमता न हो तो अभ्यास प्रशिक्षण के द्वारा उसे प्राप्त कर सकता है। उस क्षेत्र में योग्य बनने के लिए या तो ऐसे प्रशिक्षण केन्द्र में भाग ले; या इस तरह का साहित्य पढ़े जो उस क्षेत्र के कार्यों के अनुकूल हो, काम करने का दिशानिर्देशन देने वाला हो। या ऐसे लोगों, जिन्होंने उस क्षेत्र में काम किया हैं, के अनुभवों का उपयोग करे तो भी व्यक्ति उस क्षेत्र में कार्यक्षम बन सकता है। यद्यपि सब कार्यकर्त्ता एक समान नहीं होते। कुछ में अधिक कार्यक्षमता होती है, कुछ में कम होती है, फिर भी कार्यकर्त्ता का लक्ष्य रहे कि मैं अपनी कार्यक्षमता को बढ़ाता रहूं।

कार्यक्षमता हो पर कार्य में परिश्रम करने की भावना न हो, श्रमशीलता न हो तो भी कार्यकर्त्ता में अधूरापन-सा रह जाता है। कार्यकर्त्ता तो सेवक होता है, उसे तो रात को बारह बजे भी जरूरत पड़े तो काम के लिए तैयार रहना होता है। अध्ययन के क्षेत्र में कहा गया है—

'सुखार्थिनः कुतो विद्या, कुतो विद्यार्थिनः सुखम् ।'

सुखार्थी के लिए विद्या नहीं होती और जो विद्यार्थी होता है उसे सुख, सुविधा, आराम नहीं मिलता। मैं थोड़ा-सा इसमें परिवर्तन इस प्रकार करना चाहता हूं—

'सुखार्थिनः कुतः कार्यम्, कुतः कार्यार्थिनः सुखम्।'

जो कार्यार्थी है उसे सुख, आराम सुलभ कहां? और जो सुख, आराम से रहना चाहेगा वह काम कैसे कर पाएगा? संस्कृत में एक बहुत अच्छा श्लोक है कि जो काम करने वाला होता है, वह कैसा होना चाहिए, कितना श्रमशील और कष्ट सहिष्णु होना चाहिए-

क्वचिद्भूमौशयाः क्वचिदपि च पर्यंकशयनम्,
क्वचिद्कंथाधारी क्वचिदपि च माल्यांबरधरः ।
क्वचिच्छाकाहारः क्वचिदपि च शाल्योदनरुचिः,
मनस्वी कार्यार्थी न गणयति दुःखम् न च सुखम् ।।

(क्रमशः)

संघीय समाचारों का मुखपत्र

तेरापंथ टाइम्स
की प्रति पाने के लिए क्यूआर कोड स्कैन करें या आवेदन करें
https://abtyp.org/prakashan

समाचार प्रकाशन हेतु
abtyptt@gmail.com
पर ई-मेल अथवा 8905995002
पर व्हाट्सअप करें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अणुव्रत लेखक संगोष्ठी का आयोजन

दिल्ली।

अनुविभा के निर्देशानुसार अणुव्रत समिति, दिल्ली ने अणुव्रत लेखक संगोष्ठी का आयोजन भारतीय लोक प्रशासन संस्थान के साथ संयुक्त तत्वावधान में लोक प्रशासन संस्थान के ऑडिटोरियम में आयोजित किया। संगोष्ठी का विषय था-'भारतीय ज्ञान प्रणाली और अणुव्रत (इंडियन नॉलेज सिस्टम एंड अणुव्रत)'। चार सत्रों में कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के दौरान लगभग 150 लोगों की उपस्थिति सुबह से शाम तक बनी रही। कार्यक्रम बहूश्रुत मुनि उदित कुमारजी के सान्निध्य में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का कुशल संचालन अनिल दत्त मिश्रा ने किया। अध्यक्ष बाबूलाल गोलछा ने आए हुए सभी अतिथियों का स्वागत एवं अभिनंदन किया तथा विषय पर अपने विचार रखें।

आईआईपीए की तरफ से संजीव तिवारी ने सभी का स्वागत किया और 'भारतीय ज्ञान प्रणाली और अणुव्रत' पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि बीच में औपनिवेशिक उपनिवेश काल में भारतीय ज्ञान परंपरा को कुंद किया गया, लेकिन भारत की समृद्ध यात्रा रुकी नहीं, इतिहास के उदाहरण द्वारा उन्होंने इन चीजों को समझाने की कोशिश की। उन्होंने बताया कि नालंदा में हमारा बहुत बड़ा साहित्य जला दिया गया, भारतीय ज्ञान परंपरा पर एक बहुत बड़ा हमला था, परंतु भारतीय ज्ञान धारा निरंतर प्रवाहित होती रही। कार्यक्रम का आरंभ अणुव्रत गीत के संगान से हुआ। सभी अतिथियों और लेखकों ने विषय पर अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। सभी ने अणुव्रत आचार संहिता और अणुव्रत गीत की पंक्तियां को समाहित करते हुए भारतीय ज्ञान परंपरा के साथ जोड़ते हुए अपने महत्वपूर्ण विचार रखे। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि अतुल कुमार तिवारी (आईएएस फॉर्मर सेक्रेट्री स्किल इंडिया), प्रोफेसर गिरेश्वर मिश्रा (फार्मर वाइस चांसलर महात्मा गांधी इंटरनेशनल हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा) प्रोफेसर सुधा सिंह एवओडी (डिपार्टमेंट ऑफ़ हिंदी दिल्ली यूनिवर्सिटी), अमिताभ रंजन (रजिस्टर, आईआइपीए)।

दिल्ली विश्वविद्यालय एवं इंदिरा गांधी मुक्त विश्वविद्यालय के प्राचार्य एवं प्रोफेसर आदि 20 अतिथियों ने भी अपने विचार इस विषय पर रखें। बहुश्रुत मुनि उदित कुमार जी ने अपनी प्रेरणादाई उद्बोधन से पूरी सभा को दिशा दी। मुनिश्री ने अपने उद्बोधन में भारतीय ज्ञान परंपरा और अणुव्रत के गहने अंतर संबंधों को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि भारतीय ज्ञान परंपरा केवल ग्रंथों या दर्शन तक सीमित नहीं है बल्कि यह जीवन जीने की एक व्यवहारिक कला है, जब हम इस महान ज्ञान को अपने दैनिक जीवन में छोटे-छोटे संकल्पों के माध्यम से उतरते हैं तो वही अणुव्रत का रूप ले लेता है।

आज के पर्यावरण संकट और मानसिक तनाव का एकमात्र समाधान हमारे इसी आत्म-अनुशासन और संयम में छुपा है। भारतीय शिक्षा प्रणाली प्रशिक्षण, प्रयोग और प्रतिबद्धता तीन चीजों पर निर्धारित थी पहले तीनों चीज बराबर थी। प्रशिक्षण उसके बाद प्रयोग और फिर प्रतिबद्धता, प्रशिक्षण आज भी हो रहा है लेकिन प्रयोग कम हो रहे हैं और प्रतिबद्धता बहुत कम हो गई है तीनों का समन्वय से प्रशिक्षण पूरा होता है पुराने समय में गुरुकुल में रहकर ही प्रशिक्षण होता था और वहाँ हर तरह की शिक्षा दी जाती थी छोटे से छोटे काम से लेकर ज्ञान विज्ञान तक।

आज शिक्षा अर्निंग बेस हो गई है, मैं क्या पढ़ूं की कम मेहनत में ज्यादा कमा सकूं, इसलिए सत्यता, प्रमाणिकता पीछे रह गई है, पद, पैसा, प्रतिष्ठा आगे हो गए हैं। आचार्य श्री तुलसी ने कहा कि 'मौलिकता रहे सुरक्षित परिवर्तन यदि अपेक्षित' हमारे मौलिक तत्व, ज्ञान, परंपरा सुरक्षित रहने चाहिए।

सम्यक दृष्टिकोण बने संवेदनशीलता रहे तभी हमारे ज्ञान परंपरा आगे बढ़ सकती है। आचार्य श्री तुलसी ने कहा कि 'असली आजादी अपनाओ' अपने आदर्शों को अपनाओ अपने मूल्यों को सुरक्षित रखें तभी हम आगे बढ़ पाएंगे अणुव्रत केवल जीवन मूल्यों को लेकर चलने का आंदोलन है अच्छे मूल्य नैतिकता प्रमाणिकता अणुव्रत का सार है। कार्यक्रम में अनुविभा के मुख्य न्यासी तेजकरण सुराणा, अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के पूर्व महामंत्री भीकमचंद सुराणा आदि उपस्थित रहे। आभार ज्ञापन मंत्री पवन गिड़िया ने मुनिश्री, आईआईपीए एवं उपस्थित सभी का आभार व्यक्त किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

समाचार प्रेषकों से निवेदन

1. संघीय समाचारों के साप्ताहिक मुखपत्र **'अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स'** में धर्मसंघ से संबंधित समाचारों का स्वागत है।
2. समाचार साफ, स्पष्ट और शुद्ध भाषा में टाइप किया हुआ अथवा सुपाठ्य लिखा होना चाहिए।
3. कृपया किसी भी न्यूज पेपर की कटिंग प्रेषित न करें।
4. **समाचार मोबाइल नं. 8905995002 पर व्हाट्सअप** अथवा **abtyptt@gmail.com** पर ई-मेल के माध्यम से भेजें।

समाचार पत्र ऑनलाइन पढ़ने के लिए
नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें।
https://terapanthtimes.org/

:: निवेदक ::
सेवा संस्कार संगठन
अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद्

अन्तर्राष्ट्रीय परिवार दिवस का आयोजन

जयपुर।

निर्माण नगर स्थित एक निजी विद्यालय में शुक्रवार को अंतर्राष्ट्रीय परिवार दिवस के अवसर पर आयोजित धर्मसभा में जैन संतों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' अर्थात पूरे विश्व को एक परिवार मानने का संदेश दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में श्रद्धालुओं एवं समाजजनों की उपस्थिति रही। इस अवसर पर मुनि तत्व रुचि जी 'तरुण' ने अपने उद्बोधन में कहा कि भारतीय संस्कृति सदैव से पूरे विश्व को परिवार मानने की प्रेरणा देती आई है। उन्होंने कहा कि पृथ्वी हमारा घर है और समस्त मानवता हमारा परिवार है। जब अपनत्व और भाईचारे की भावना विकसित होती है, तब आपसी मनमुटाव और कटुता स्वतः समाप्त हो जाती है।

मुनिश्री ने आगे कहा कि जिस प्रकार व्यक्ति अपने निजी परिवार की सुरक्षा, स्वच्छता और विकास का ध्यान रखता है, उसी प्रकार समाज, संगठन, राष्ट्र और विश्व के प्रति भी जिम्मेदारी का भाव रखना चाहिए। सभी एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं, इसलिए व्यापक दृष्टिकोण अपनाना समय की आवश्यकता है। धर्मसभा में मुनि संभव कुमार जी ने कहा कि मनुष्य अकेला जन्म लेता है और अकेला ही संसार से जाता है, लेकिन जीवन अकेले नहीं जी सकता। जीवन में अनेक लोगों का सहयोग जुड़ा होता है। उन्होंने परिवार में सुख-शांति और समरसता बनाए रखने के लिए प्रेम, विश्वास, सेवा-सहयोग और सहिष्णुता को आवश्यक बताया।

उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा कि जैसे पौधे को हरा-भरा रखने के लिए खाद, पानी, हवा और प्रकाश की आवश्यकता होती है, वैसे ही परिवार को मजबूत और खुशहाल बनाने के लिए इन चार गुणों का होना जरूरी है। कार्यक्रम की शुरुआत तीर्थंकर भगवान सुपार्श्वनाथ की स्तुति से हुई। इस दौरान तेरापंथ संगठन के संविधान का वाचन किया गया तथा श्रावक निष्ठा पत्र के संकल्पों को दोहराया गया। अंत में मंगल मंत्रोच्चार के साथ सभा का समापन हुआ।

तेरापंथ मेरापंथ कार्यशाला का आयोजन

घाटकोपर।

परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमणजी की विदुषी शिष्या शासन श्री साध्वी कंचनप्रभाजी, शासन श्री साध्वी मंजुरेखाजी आदि ठाणा ५ के सान्निध्य तेरापन्थ सभा भवन में 'तेरापंथ मेरा पंथ' कार्यशाला का शुभारम्भ साध्वी वृन्द द्वारा नमस्कार महामंत्र के समुच्चारण पश्चात् उपासक हस्तीमल डांगी ने श्रद्धा प्रणत गीत का संगान किया।

विशाल धर्म सभा को प्रेरणा प्रदान करते हुए शासन श्री साध्वी कंचनप्रभाजी ने कहा - भगवान महावीर के शासन में चारित्र का सर्वोत्कृष्ट मूल्य है परन्तु आगम का एक वाक्य— 'नत्थि चरित्तं सम्मत्त विहुणं' सम्यक्त्व के बिना चारित्र नहीं। यह आगम वाणी आचार्य भिक्षु के अन्तःकरण को उद्वेलित कर रही थी। आखिर अनेक संघर्षों को गले लगाकर उन्होंने सम्यक्त्व का रास्ता तय किया। उन्होंने कहा - हिंसा हिंसा है, एकेन्द्रिय की हिंसा से पंचेन्द्रिय का पोषण अहिंसा नहीं, पुण्य भी नहीं।

इसी का नाम तेरापंथ है। आज तेरापंथ के आचार्य पट्ट पर ११वें पट्टधर परम श्रद्धेय आचार्य श्री महाश्रमणजी विराजित हैं, जिनकी आज्ञा में चारित्रात्माओं का विशाल परिवार है। योगक्षेम वर्ष अपने आप में जैन धर्म का साईंस है। शासनश्री साध्वी मंजु रेखाजी ने कहा— लौकिक दया और लोकोत्तर दया को समझना बहुत जरूरी है। आचार्य भिक्षु के सिद्धान्त प्रासंगिक हैं। जिन्होंने सैकड़ों साल पहले अनुशासन और दिशा बोध समझाकर सम्यक्त्व का मार्ग गले उतारा था। मिथ्यात्व का अंधेरा मिटाने के लिए उन्होंने कठिनाइयों को झेलकर भी भगवान महावीर के सिद्धान्तों को जन-जन तक पहुँचाया और सही मंजिल तय की। प्रशिक्षक उपासक रतन सियाल ने छोटे-छोटे उदाहरण से प्रतिमा पूजा, दान, दया पर प्रकाश डाला। मुंबई सभा के अध्यक्ष माणक घींग ने विचार रखे और कार्यशाला प्रदाता की प्रशंसा की। सभाध्यक्ष शान्तिलाल कोठारी, मंत्री संजय सोनी, महिला मण्डल अध्यक्षा मंजु बड़ाला तथा उनकी टीम सक्रिय रहे। उपाध्यक्ष सुरेश राठौड़ ने आभार व्यक्त किया। साध्वी वृन्द की तत्व परख गीतिका ने कार्यशाला में रंग भर दिया।

समाज और संस्कृतियों को जोड़ता है अणुव्रत

चेन्नई।

अणुव्रत समिति, चेन्नई द्वारा रविवार को सी यू शाह, पुरूषवाक्कम में 'स्वस्थ समाज के निर्माण में सामाजिक संस्थाओं की भूमिका' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन हुआ।

अणुव्रत आंदोलन के प्रवर्तक आचार्य तुलसी द्वारा रचित अणुव्रत गीत 'संयममय जीवन हो' के सामूहिक संगान से संगोष्ठी का शुभारंभ हुआ। अध्यक्षा सुभद्रा लुणावत ने अपने स्वागत-भाषण में संगोष्ठी की थीम के बिंदु स्वार्थ- स्वयं निखरें, परार्थ- परिवार व समाज निखरें और परमार्थ- चेतना निखरें पर विचार रखे। जैन अंतरराष्ट्रीय व्यापार संगठन (जीतो) चेन्नई चैप्टर के अध्यक्ष राजेश चंदन ने बतौर मुख्य अतिथि कहा कि जैनाचार्य तुलसी ने सर्व समाज सुधार उद्देश्य से आज से 75 वर्ष पूर्व अणुव्रत आंदोलन का प्रवर्तन किया। अणुव्रत यानी छोटे-छोटे व्रत-नियम। ये छोटे-छोटे नियम व्यक्ति को बड़ा बनाते हैं। अणुव्रत के जरिए व्यक्ति, समाज और संस्कृतियों को जोड़ा जा सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे अणुव्रत विश्व भारती सोसाइटी के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष कैलाश बोराणा ने अणुव्रत आचार संहिता का वाचन किया और अणुव्रत समिति चेन्नई की इस अभिनव पहल की प्रशंसा की। तमिलनाडु अल्पसंख्यक आयोग सदस्य पी. राजेन्द्रप्रसाद जैन ने पूर्व में प्रकाशित तमिल भाषा में अणुव्रतम् पत्रिका को पुनः शुरू करने का आग्रह किया, तो विशिष्ट अतिथि जैन महासंघ के अध्यक्ष प्यारेलाल पितलिया ने इसकी बहाली के लिए आश्वस्त किया। विशिष्ट अतिथि विजयराज कटारिया ने कहा कि अणुव्रत हमें जीने की कला सिखाता है। मुख्य वक्ता राकेश खटेड़ ने कहा कि हर संस्था अच्छा कार्य कर रही हैं। यह आचार-विचार के आदान-प्रदान का मंच है। हम अच्छाइयों को आपस में साझा करके समाज विकास में योगदान करें। उन्होंने कहा कि 'देहरी-दीपक न्याय' के अनुसार अणुव्रत अंदर और बाहर, दोनों तरफ उजाला करता है। यह मानव को दुर्गति से बचाता है। अणुविभा के राष्ट्रीय संगठन मंत्री राजेश चावत ने बताया कि अणुव्रत अभियान की गूंज गाँव की चौपाल से लेकर राष्ट्रपति भवन और संयुक्त राष्ट्र तक पहुँची है। 'एलीवेट' राष्ट्रीय प्रभारी मुदित भंसाली ने पीपीटी के साथ नशा-मुक्ति पर अपना प्रभावी व्यक्तव्य दिया।

उन्होंने उदाहरण देकर कहा कि जब भारत के प्रधानमंत्री नशा को 'ना' कह सकते हैं तो हमें भी हमारी व्यसन-मुक्त जीवनशैली पर कायम रहना चाहिए। सुखी परिवार और समर्थ समाज के लिए नशामुक्ति अनिवार्य है। कार्यक्रम संयोजक, उपाध्यक्ष डॉ. दिलीप धींग ने कहा कि तीर्थंकर महावीर ने गृहस्थ के लिए पाँच अणुव्रत दिए, तो भगवान बुद्ध ने पंचशील और पतंजलि ने पाँच यम के रूप में उन्हें आगे बढ़ाया। आचार्य हेमचंद्र, हीरविजय, जैन दिवाकर, शांतिविजय आदि संतों का उल्लेख करते हुए उन्होंने आचार्य तुलसी द्वारा प्रवर्तित अणुव्रत आंदोलन की बात कही।

पृष्ठ 1 का शेष

वैभव की अंधी दौड़...

१. मौत निश्चित, समय अनिश्चित : मृत्यु का आना तो तय है, लेकिन वह किस क्षण आएगी, यह पूरी तरह अज्ञात है। ऐसी अनिश्चित स्थिति में भला कोई जागरूक आत्मा प्रमाद (लापरवाही) कैसे कर सकती है?

२. चिंतन की दिशा बदलें : मनुष्य को भौतिक वस्तुओं के बजाय ज्ञान के क्षेत्र में सोचना चाहिए कि—'मैंने कौन सा आगम पढ़ लिया है और कौन सा पढ़ना बाकी है?'

३.साधना और स्वाध्याय : अपनी पूरी क्षमता के साथ धर्म, साधना, स्वाध्याय और सेवा के कार्यों में समय बिताना ही जीवन का सच्चा पुरुषार्थ है।

योगक्षेम वर्ष की गतिविधियों के संकलन का निर्देश : प्रवचन के दौरान आचार्य प्रवर ने विशेष रूप से उल्लेख किया कि वर्तमान में 'योगक्षेम वर्ष' गतिमान है। इस पूरे कार्यक्रम की पृष्ठभूमि, प्रशिक्षण कक्षाएं, प्रशिक्षकों के विवरण, गोष्ठियां और निर्णयों जैसी समस्त महत्वपूर्ण सामग्रियों को योजनाबद्ध रूप से एकत्रित और प्रलेखित (Document) किया जाना चाहिए। पूज्य प्रवर ने इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए इच्छुक साधु-साध्वियों को अपने नाम देने की प्रेरणा दी।

अभिव्यक्ति एवं मंगल आशीर्वाद : मंगल प्रवचन के उपरान्त मुनि भरतकुमार जी ने विषय के संदर्भ में अपनी सुंदर अभिव्यक्ति दी। पूज्य गुरुदेव की पावन सन्निधि में उपस्थित समणी प्रतिभाप्रज्ञा जी एवं समणी पुण्यप्रज्ञा जी ने भी अपनी आध्यात्मिक अनुभूतियां प्रस्तुत कीं तथा सुमधुर गीत का संगान किया। आचार्यश्री ने दोनों समणियों को निरंतर आत्म-विकास का मंगल आशीर्वाद प्रदान किया।

मन का होना जीवन...

३. अखंड और नित्य : जो द्रव्य अमूर्त होता है, वह नित्य होता है। आत्मा को कभी भी खंडित या टुकड़ों में विभाजित नहीं किया जा सकता। मोक्ष की अवस्था में आत्मा के प्रदेश पूरी तरह स्थिर हो जाते हैं।

मन की शक्ति–मोक्ष का द्वार या सातवीं नरक का रास्ता : शांतिदूत ने संसारी आत्माओं के परिभ्रमण और कर्म बंधन के विज्ञान को समझाते हुए मन (संज्ञी चेतना) की महत्ता पर विशेष प्रकाश डाला।

१. संज्ञी और असंज्ञी का अंतर: जिस प्राणी के पास मन है (संज्ञी), उसी के कर्मों का प्रगाढ़ बंधन होता है। बिना मन वाले (असंज्ञी) प्राणी के ज्यादा पाप का बंध नहीं होता, इसीलिए वे पहली नरक से नीचे नहीं जा सकते।

२.मनुष्य के पास दोनों छोर : मन का होना आत्मिक विकास का सूचक है। यदि मनुष्य अपने मन का दुरुपयोग कर भयंकर दुष्कृत्य करे तो वह सातवीं नरक की घोर यातनाओं तक गिर सकता है। इसके विपरीत, यदि वह इसी मन से धर्म, सेवा और स्वाध्याय करे, तो साधना के उच्च शिखर को छूकर केवलज्ञान और मोक्ष भी प्राप्त कर सकता है। दर्शन के विद्वान बनने की

प्रेरणा व जिज्ञासा समाधान : प्रवचन के दौरान युगप्रधान ने शासन गौरव को बढ़ाने का आह्वान करते हुए समस्त साधु-साध्वियों, समणियों और मुमुक्षुओं को जैन दर्शन के क्षेत्र में गहरे स्वाध्याय के साथ उच्च कोटि का विद्वान व विदुषी बनने की पावन प्रेरणा दी। इसके पश्चात, आराध्य ने चारित्रात्माओं द्वारा प्रस्तुत की गई गूढ़ तात्विक जिज्ञासाओं का अत्यंत सरल शब्दों में समाधान किया।

अभिव्यक्ति एवं वंदना : आचार्यश्री की अभिवंदना के क्रम में मुनि कैवल्य कुमार जी एवं मुनि धवल कुमार जी ने विषय के संदर्भ में अपने सुंदर विचार रखे। श्रावक समाज की ओर से संजय भानावत ने सुमधुर श्रद्धा गीत का संगान कर आराध्य के चरणों में अपनी मंगल भावनाएं समर्पित कीं।

बोलती किताब

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

धर्म, सद्गुण और आत्मशुद्धि का जीवनदर्शन

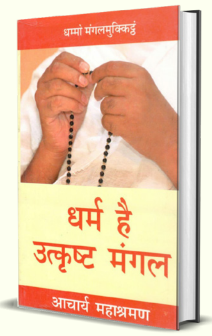

पूज्य आचार्यश्री महाश्रमण जी की प्रेरणादायी वाणी पर आधारित पुस्तक "धर्म है उत्कृष्ट मंगल" मानव जीवन में धर्म के वास्तविक स्वरूप और उसके गहन महत्व को अत्यंत सरल, प्रेरक और जीवनोपयोगी शैली में प्रस्तुत करती है। जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित यह कृति धर्म को केवल पूजा-पाठ या परंपरा तक सीमित नहीं मानती, बल्कि उसे जीवन के श्रेष्ठ आचरण, सद्गुणों और आत्मशुद्धि का आधार बताती है। इसमें धर्म के उन मूल सिद्धांतों को सहज और स्पष्ट भाषा में समझाया गया है, जो मनुष्य के विचारों, भावनाओं और आचरण को अधिक पवित्र, संतुलित और सार्थक बनाने की प्रेरणा देते हैं।

पुस्तक में यह स्पष्ट किया गया है कि धर्म का वास्तविक स्वरूप बाहरी आडंबर या दिखावे में नहीं, बल्कि व्यक्ति के भीतर विकसित होने वाले सद्गुणों में निहित है। अहिंसा, संयम, सत्य, क्षमा और करुणा जैसे मूल्य ही जीवन को वास्तव में मंगलमय बनाते हैं। जब ये मूल्य केवल विचारों तक सीमित न रहकर व्यवहार में उतरते हैं, तब व्यक्ति के जीवन में शांति, संतुलन और सकारात्मकता का वातावरण निर्मित होता है। इस प्रकार धर्म मनुष्य के भीतर एक नई दृष्टि का विकास करता है, जो उसे जीवन को अधिक विवेकपूर्ण और संवेदनशील ढंग से जीने की प्रेरणा देती है।

यह कृति पाठक को यह अनुभूति कराती है कि धर्म केवल किसी विशेष समय, स्थान या अनुष्ठान तक सीमित नहीं होता, बल्कि वह जीवन के प्रत्येक क्षण और प्रत्येक व्यवहार से जुड़ा होता है। जब मनुष्य अपने भीतर झाँककर अपने दोषों को पहचानने और उन्हें सुधारने का प्रयास करता है, तब उसके व्यक्तित्व में वास्तविक परिवर्तन दिखाई देने लगता है। धर्म का यही आंतरिक स्वरूप व्यक्ति को अधिक विनम्र, संवेदनशील और विवेकशील बनाता है, जिससे उसका जीवन केवल व्यक्तिगत उन्नति तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह समाज के लिए भी प्रेरणादायी बन जाता है।

आज के तेज़ और व्यस्त जीवन में यह पुस्तक पाठक को ठहरकर अपने भीतर झाँकने और जीवन के वास्तविक मूल्यों को समझने की प्रेरणा देती है। इसकी सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा, गहन विचारों की स्पष्ट प्रस्तुति तथा प्रेरणादायी दृष्टि पाठक के मन में आत्मचिंतन और सकारात्मक परिवर्तन का भाव जागृत करती है। यह कृति बताती है कि जब मनुष्य धर्म के मूल सिद्धांतों को अपने जीवन में अपनाता है, तब उसका जीवन अधिक संतुलित, शांत और अर्थपूर्ण बन जाता है, और यही अवस्था वास्तव में "उत्कृष्ट मंगल" की अनुभूति कराती है।

इस पुस्तक को ऑनलाइन पढ़ने के लिए
अभी डाउनलोड करें
सम्बोधि ई-लाइब्रेरी ऐप्प
Sambodhi E-Library
SCAN HERE
Readable & Audible Mobile Application

पुस्तक प्राप्त करने हेतु सम्पर्क करें
आदर्श साहित्य विभाग,
जैन विश्व भारती लाडनूं
+91 87420 04849
books.jvbharati.org
books@jvbharati.org

स्वागत कार्यक्रम आयोजित

गुड़ियात्तम।

युगप्रधान आचार्य श्री महाश्रमण जी के विद्वान सुशिष्य डॉ मुनि पुलकित कुमार जी, मुनि आदित्य कुमारजी ठाणा 2 चेन्नई की तरफ बिहार करते हुए मादनुर से 10km. का विहार करते हुए गुड़ियात्तम तेरापंथ सभा भवन में स्वागत जुलूस के साथ पधारे। जहां स्वागत कार्यक्रम आयोजित हुआ।

मुनिश्री ने आठ कर्मों में ज्ञान वरणीय कर्म पर विवेचन करते हुए श्रावक समाज को तत्वज्ञान को सीखने की प्रेरणा दी। मुनि श्री ने कहा गुड़ियात्तम में हमारा पहली बार आगमन हुआ है श्रावक श्राविकाओं में ज्ञान के साथ श्रद्धा भक्ति विशेष बढ़नी चाहिए। तेरापंथ सभा अध्यक्ष महेंद्र गिरिया, महावीर गिरिया तेयुप अध्यक्ष भरत गिरिया, राजेश गिरिया, सुशील गिरिया, मानमल नाहर ने समाज की तरफ से स्वागत किया। महिला मंडल से कंचन बाई समदड़िया, चंद्राबाई गिरिया नीतू नाहर रेखा गिरिया विमल समदड़िया ने स्वागत गीत प्रस्तुतकिया। मंगलाचरण रीटा अच्छा ने किया। मुनि आदित्य कुमार जी ने श्रावक धर्म पर विवेचन किया।मार्ग सेवा में गुड़ियात्तम, मादनुर का श्रावक समाज उपस्थित था।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स
25 मई - 31 मई 2026

ऊंचा आसन व्यवस्था मात्र, अंतस के सद्गुण ही हैं महानता की असली कसौटी : आचार्यश्री महाश्रमण

परिस्थितियाँ कैसी भी हों, आचार्य तुलसी की भांति समता में रमन करें साधक : शांतिदूत

लाडनूं।
13 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, महातपस्वी, युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज 'तप की महिमा' विषय पर चतुर्विध धर्मसंघ को पावन पाथेय प्रदान किया। आचार्यश्री ने स्पष्ट किया कि संसार में मनुष्य की वास्तविक कसौटी उसके बाहरी रूप-रंग, वेशभूषा या उच्च पद से नहीं, बल्कि उसके भीतर छिपे ज्ञान, तप और सद्गुणों से होती है।

साधारण वेश में भी विराजमान हो सकता है विराट व्यक्तित्व : आचार्य प्रवर ने फरमाया कि इस संसार में लोग वक्तृत्व, कला या साहित्य के माध्यम से प्रसिद्धि प्राप्त कर सकते हैं, किंतु तपस्या का वैभव साक्षात् दिखाई देता है। यदि कोई साधक सामान्य कुल में जन्मा हो, मैले वस्त्रों में हो या हीन जाति का हो, परन्तु यदि उसका संयम और तप उच्च कोटि का है, तो वह 'तपोधन' बनकर सर्वत्र पूजनीय हो जाता है। कपड़े और शारीरिक सुंदरता मात्र बाहरी आवरण हैं। आवश्यक नहीं कि अच्छे वस्त्र पहनने वाला ही ज्ञानी या महान हो; साधारण काया और सामान्य पोशाक में भी एक विराट आत्मा निवास कर सकती है।

स्थान नहीं, योग्यता और गुण हैं असली कसौटी : मर्यादाओं और व्यवस्थाओं पर प्रकाश डालते हुए शांतिदूत ने फरमाया कि किसी का उच्च स्थान या ऊंचे आसन पर बैठना मात्र एक व्यवस्थागत 'प्रोटोकॉल' हो सकता है। कोई नीचे बैठने वाला व्यक्ति भी

> तपोधन के आगे फीका है बाहरी वैभव
> -आचार्यश्री महाश्रमण

अपने गुणों के कारण महान हो सकता है। असली मूल्यांकन इस बात से होना चाहिए कि आत्मा में कितना ज्ञान है, जीवन में कितनी तपस्या है और अंतस में कितने सद्गुण रूपी आभूषण हैं।

प्रतिकूलताओं में समता : आचार्य तुलसी का प्रेरक प्रसंग : जीवन के उतार-चढ़ावों का जिक्र करते हुए आचार्यश्री ने फरमाया कि अनुकूलता और प्रतिकूलता—दोनों ही स्थितियों में साधक को धैर्य और समता का परिचय देना चाहिए। युगप्रधान आचार्य श्री तुलसी का प्रेरक उदाहरण देते हुए पूज्य प्रवर ने बताया कि आचार्य तुलसी के जीवन में अनेक बाह्य और आंतरिक प्रतिकूलताएं आईं, परंतु उन्होंने समता और शांति के महामंत्र से हर परिस्थिति का वीरतापूर्वक मुकाबला किया। हमें भी अपनी आत्मा को तपोमय संयम से भावित करने का निरंतर पुरुषार्थ करना चाहिए।

संवाद और गीतों से गुरु-अभिवंदना: प्रवचन के उपरांत आचार्यश्री के जन्मोत्सव एवं पट्टोत्सव के उपलक्ष्य में वर्धापना का क्रम आज भी उत्साहपूर्वक जारी रहा। इस कड़ी में मुनि अजितकुमार जी, मुनि देवेंद्रकुमार जी, मुनि मृदुकुमार जी, मुनि वर्धमानकुमार जी एवं मुनि धैर्यकुमार जी ने संयुक्त रूप से एक सुंदर आध्यात्मिक संवाद प्रस्तुत किया। मुनि देवर्यकुमार जी, साध्वी परमार्थप्रभा जी, साध्वी करुणप्रभा जी और साध्वी नंदिताश्री जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी। श्रावक समाज की ओर से श्री अमित सिंघी ने गुरु चरणों में सुमधुर श्रद्धा-गीत अर्पित किया।

राग के समान कोई दु:ख नहीं, त्याग के समान कोई सुख नहीं : आचार्यश्री महाश्रमण

साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी के मनोनयन का एक दशक पूरा; गुरुदेव ने दिया 'चित्त समाधि' का आशीष

लाडनूं।
14 मई, 2026

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, तीर्थंकर के प्रतिनिधि आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज 'काम-राग की दु:खकारिता' विषय पर उत्तराध्ययन सूत्र के आलोक में मर्मस्पर्शी देशना दी। आचार्यश्री ने भौतिक और आध्यात्मिक दृष्टिकोण के बुनियादी अंतर को स्पष्ट करते हुए वैराग्य की भूमिका को जीवन का सर्वोच्च शिखर बताया।

निर्जरा से मिलने वाला सुख ही वास्तविक : आचार्य प्रवर ने फरमाया कि संसार में दो तरह के दृष्टिकोण हैं। एक वह जो इन्द्रिय जनित भोगों में सुख ढूंढता है, और दूसरा वह जो त्याग और संयम में भीतरी आनंद पाता है। कर्मों के कटने (निर्जरा) और मोह के हल्के पड़ने पर भीतर जो अनुकूल संवेदना जागती है, वही वास्तविक सुख है। पदार्थों से मिलने वाला सुख तो नश्वर है और वह अंततः दु:ख का ही कारण बनता है।

वैराग्य की कसौटी : पूज्य प्रवर ने आगम के सूत्रों को दोहराते हुए फरमाया कि वैराग्य की भूमिका में चिंतन पूरी तरह बदल जाता है। एक सच्चे साधक के लिए संसार के सारे रागात्मक गीत विलाप जैसे हैं, सारा नाट्य विडंबना है, आभूषण मात्र एक भार हैं और तमाम काम-भोग दु:खों को आमंत्रण देने वाले हैं। संयम में रत साधु के लिए संन्यास देवलोक समान है, लेकिन जिसमें संयम नहीं, उसके लिए यही जीवन नरक तुल्य बन जाता है। गुरुदेव ने 75 वर्ष से अधिक का संयम पर्याय पालने वाले आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी का उदाहरण देते हुए चारित्रात्माओं को स्वावलंबन और निरंतर आत्म-चिंतन की प्रेरणा दी।

साध्वीवर्या के मनोनयन के 10 वर्ष पूर्ण : दिन का विशेष आकर्षण धर्मसंघ की साध्वीवर्या श्री संबुद्धयशा जी का 11वां मनोनयन दिवस रहा। गुरुदेव ने उनके

> मोह हल्का हो तो संन्यास, आसक्ति रहे तो नरक तुल्य है जीवन
> –आचार्यश्री महाश्रमण

एक दशक के कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि वे ज्ञान, दर्शन, चारित्र और सेवा भावना का निरंतर विकास करें। आचार्यश्री ने उन्हें 'चित्त समाधि' बनाए रखने और स्वास्थ्य का ध्यान रखते हुए बिना प्रमाद सेवा कार्य करने का पावन आशीर्वाद दिया।इस अवसर पर साध्वी प्रमुखा श्री विश्रुतविभा जी ने संस्मरणों के माध्यम से भाव अभिव्यक्ति दी। मुनि कमल कुमार जी, शासन गौरव साध्वी कनकश्री जी और समणी नियोजिका ने भी मंगल भावनाएं रखीं। संतवृंद ने सामूहिक रूप से सुमधुर गीत का संगान किया।

आचार्य भिक्षु : जीवन दर्शन

अन्तिम संदेश

बीज को फल तक पहुंचने में लम्बी दूरी तय करनी पड़ती है। उसके बिना फल में रस देने की शक्ति नहीं आती। साधना का बीज सिद्धि की दिशा में बढ़ता है तब अनुभव का फल पक जाता है। आचार्य भिक्षु ने अन्तिम समय में अनुभव से पगी वाणी में जो कहा, वह इतना सरस और मोहक है कि उसका रसास्वादन करने वाला व्यक्ति परम तृप्ति का अनुभव करने लग जाता है।

भादवा सुदी चतुर्थी, संवत् 1860 (संवत्सरी से पहला दिन) आचार्य भिक्षु ने श्रावकों की परिषद् के बीच साधुओं को आमंत्रित कर कहा–

1. तुम लोग मुझे जिस दृष्टि से देखते रहे, उसी दृष्टि से भारमल को देखना। जैसे मुझे मानते रहे हो वैसे ही भारमल को मानना।
2. मैंने भारमल को योग्य समझकर गण का भार सौंपा है। उसमें शुद्ध साधुत्व की साधना है। वह सब साधु-साध्वियों का नायक है। उसकी आज्ञा का उल्लंघन मत करना।
3. अरिहन्त की आज्ञा में रहे, उसे साधु मानना। आज्ञा का उल्लंघन कर प्रतिकूल व्यवहार करता है, उसका पक्षपात मत करना।
4. गुरु की आज्ञा अरिहन्त की आज्ञा है। जो साधु-साध्वी भारमल की आज्ञा में रहे, शुद्ध आचार की अनुपालना करे, उनकी उपेक्षा मत करना। उनकी सेवा-भक्ति करना।
5. कोई व्यक्ति कर्मयोग से अरिहन्त और सद्गुरु की आज्ञा का उल्लंघन कर स्वच्छन्द हो जाता है, उसे वन्दना मत करना, उसका विश्वास मत करना और उसे साधु मत मानना। उसे चार तीर्थ में मत गिनना।
6. कोई साधु-साध्वीगण में रहते हुए दोष का सेवन करता है, असत्य बोलता है, उसका लिहाज मत करना। यदि वह प्रायश्चित्त न ले तो गण से अलग कर देना।
7. शिथिलाचारी साधुओं से दूर रहना, उनका सम्पर्क मत करना, उनसे परिचय मत बढ़ाना।
8. सब साधु-साध्वियां परस्पर विशेष सौहार्द रखना।
9. योग्यता देखकर दीक्षा देना। जिस-तिस को दीक्षा मत देना।
10. शिष्यों की ममता मत रखना। जो शुद्ध आचार पाल सके, उसी को दीक्षित करना। अस्थिर मन वाले को गण में सम्मिलित मत करना।
11. पांच समिति और तीन गुप्ति में पूरी सावधानी रखना।
12. पौद्‌लिक पदार्थों पर ममता मत करना, समता का विकास करना।
13. एक-दूसरे के प्रति राग-द्वेष मत करना, दलबन्दी मत करना।

संदर्भ पुस्तकें : आचार्य भिक्षु जीवन दर्शन, भिक्खु दृष्टांत, श्रावक संदेशिका

भिक्षु की कहानी जयाचार्य की जुबानी

हम ऐसा नहीं जानते

भीखणजी स्वामी ने हेमजी स्वामी से कहा– 'हमने उन्हें (अपने पूर्व गुरु को) छोड़ा, तब पांच वर्ष तक हमें पूरा आहार भी नहीं मिला। घी और चिकनाई की तो बात ही कहां? वस्त्र के रूप में कभी-कभी 'वासती' मिलता; उसके थान की कीमत सवा रुपया थी।' भारमल कहता– 'आप इसका उत्तरीय (पछेवड़ी या चादर) करें।' तब मैं कहता– 'एक चोलपट्टा (अधोवस्त्र) तुम करो और एक मेरे लिए करो।'

'हम सब साधु गोचरी में आहार पानी लाकर जंगल में चले जाते। आहार-पानी को वृक्षों की छांव में रखकर हम सूर्य का आतप लेते। शाम को गांव में लौट आते।'

इस प्रकार हम कष्ट सहते थे। कर्म बंधन को तोड़ते थे।

हम ऐसा नहीं जानते थे कि हमारा मार्ग जमेगा और हमारे संघ में इस प्रकार स्त्री-पुरुष दीक्षा लेंगे ओर इस प्रकार श्रावक-श्राविका होंगे।

हमने सोचा था आत्मा का कार्य सिद्ध करेंगे, अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिए प्राण न्योछावर कर देंगे। यह सोचकर हम तपस्या करते थे।

बाद में कोई-कोई व्यक्ति हमारे सिद्धांत में विश्वास करने लगा, तत्त्व को समझने लगा।

तब थिरपाल, फतैचंद आदि हमारे साथ वाले साधुओं ने कहा– लगता है लोग तत्त्व को समझेंगे फिर आप इतनी कठोर तपस्या क्यों करते हैं? तपस्या करने के लिए तो हम हैं ही। आप बुद्धिमान हैं, आप धर्म का उद्योत करें, लोगों को तत्त्व समझायें। उसके बाद हम विशेष पुरुषार्थ करने लेगे। हमने आचार और अनुकंपा की चौपइयां रची, व्रत अन्नत की चौपई रची। बहुत लोगों को तत्त्व समझाया फिर व्याख्यानों की रचना की।

जानें तेरापंथ को पहचाने स्वयं को

उत्कृष्ट मंगल-2

उत्कृष्ट मंगल की दूसरी पहचान है 'संयम'। संयम का अर्थ इतना ही नहीं कि यह छोड़ दो या वह छोड़ दो। इसका यह अर्थ होता है जो 'यम' सहित हो अर्थात् नियम सहित हो, सीमा रहित हो। जितना असीम संसार उतना असीम बंधन, जितना सीमित परिभोग उतना सीमित बंधन, उतनी शीघ्र मुक्ति। अतः हमारी धार्मिक यात्रा में संयम का बड़ा महत्व है। छोटी-छोटी चीजों में भी हम संयम कर सकते हैं, जैसे- ऊपर से नमक नहीं लेना, किसी ने अपशब्द कह दिए तो गुस्सा नहीं करना आदि-आदि।

उत्कृष्ट मंगल की तीसरी पहचान है 'तप'। तप में दो अक्षर, दो ही विशेषता लिए 'त' अर्थात् ताप का निवारण करने वाला, 'प' पाप का निवारण करने वाला। वस्तुतः देखा जाए तप के बिना संयम साधना कठिन हो जाती है। तप के कई प्रकार है। अनशन - ऊनोदरी - भिक्षाचरी - रसपरित्याग - कायक्लेश - प्रतिसंलीनता - प्रायश्चित - विनय - वैयावृत्य - स्वाध्याय - ध्यान - कायोत्सर्ग इनमें से साधक अपनी-अपनी क्षमता के अनुसार प्रयोग करता रहे। यह तीन प्रकार के मंगल जिनके जीवन में होते हैं वे धार्मिक जीवन में प्रगति करते रहते हैं और सिद्धि का वरण करते हैं।

साप्ताहिक प्रेरणा : ।। जमीकंद का त्याग करे ।।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
25 मई - 31 मई 2026
हे प्रभो! यह तेरापंथ

चेतना को सांसारिक विषयों से हटाकर अंतस से नाता जोड़ना ही वास्तविक ध्यान : आचार्यश्री महाश्रमण

लाडनूं में सर्वेन्द्रिय संयम की महत्ता पर विशेष देशना; चक्षु, श्रोत्र और रसना को विवेकपूर्वक मर्यादित रखने की दी पावन प्रेरणा

लाडनूं।
15 मई, 2026

> विज्ञान कभी अतीन्द्रिय चेतना की बराबरी नहीं कर सकता
>
> –आचार्यश्री महाश्रमण

जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के एकादशमाधिशास्ता, अखण्ड परिव्राजक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज 'इन्द्रिय संयम की साधना के प्रयोग' विषय पर जैन विश्व भारती परिसर में गंभीर तात्विक देशना प्रदान की।

आचार्यश्री ने बाह्य जगत बनाम आभ्यंतर जगत के रहस्यों को खोलते हुए स्पष्ट किया कि इंद्रियों को रोकना ही भीतर उतरने का एकमात्र मार्ग है।

तकनीक बनाम अतीन्द्रिय चेतनाः आचार्य प्रवर ने फरमाया कि मानव शरीर में पांच ज्ञानेन्द्रियां और पांच कर्मेन्द्रियां हैं, जो बाहर की दुनिया को जानने का माध्यम हैं। आज विज्ञान और यंत्रों के माध्यम से बहुत दूर (विप्रकृष्ट) और ओझल (व्यवहित) चीजों को देखा जा सकता है, लेकिन यंत्र कभी भी 'अतीन्द्रिय चेतना' की बराबरी नहीं कर सकते। अतीन्द्रिय ज्ञान के द्वारा सूक्ष्म से सूक्ष्म को बिना किसी उपकरण के सीधे आत्मा से जाना जा सकता है।

भीतर उतरना है तो इंद्रियां रोकेंः युगप्रधान ने साधना के व्यावहारिक सूत्र प्रदान करते हुए फरमाया कि इंद्रियां केवल बाहर का माध्यम हैं, भीतर का नहीं। यदि लक्ष्य अंतस को जानना है, तो इंद्रियों के प्रयोग को सीमा में बांधना होगा।

आचार्य श्री महाप्रज्ञ जी द्वारा करवाए जाने वाले 'सर्वेन्द्रिय संयम' का स्मरण करते हुए गुरुदेव ने कहा कि 'ध्यान' वास्तव में बाहर से संबंध तोड़कर भीतर से नाता जोड़ना ही है।

इंद्रिय संयम के व्यावहारिक नियमः

१. चक्षु संयम : दृष्टि को राग-द्वेष से बचाएं, आवश्यकता न हो तो आँखें नीचे रखें।

२. श्रोत्र संयमः कानों को बंद करना संभव न हो, तो चेतना को सुनने के विषयों से हटा लें।

३. रसन व घ्राण संयम : भोजन में विकृति और विमय का वर्जन करें तथा गंध की आसक्ति से बचें।

लेखपत्र का उच्चारण और हाजरी वाचन : आज चतुर्दशी के पावन प्रसंग पर आचार्य प्रवर ने मर्यादा पत्र (हाजरी) का वाचन कर चारित्रात्माओं को शासन के प्रति निष्ठा और जागरूकता की प्रेरणा दी। इस अवसर पर उपस्थित समस्त संतों, साध्वियों और समणियों ने अपने स्थान पर खड़े होकर सामूहिक रूप से लेख पत्र का सहर्ष उच्चारण किया।

मंगल प्रवचन के उपरान्त गुरुदेव की अभिवंदना के क्रम में साध्वी स्तुतिप्रभा जी ने सुमधुर गीत का संगान किया और साध्वी वीरप्रभा जी ने अपनी भावाभिव्यक्ति दी।

नन्हे बालक परम और पार्थ बच्छावत ने भी अपनी प्रस्तुति से आराध्य के चरणों में वंदना अर्पित की।

योगक्षेम चित्रमय झलकियां

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - पवन एच जैन द्वारा मै.आर.डी. प्रिंटर्स एण्ड पब्लिसर्स प्राइवेट लिमिटेड बी 48, सेक्टर 8, नोएडा, गौतमबुद्ध नगर, उत्तर प्रदेश - 201301 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित।